वेद-वार्ता
Veda-vārtā

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन का त्रैमासिक वार्तापत्र
Quarterly News Letter of Maharshi Sandipani Rashtriya Vedavidya Pratishthan, Ujjain

विक्रम संवत् २०८२-८३ | जनवरी २०२६ से मार्च २०२६ तक | कुल पृष्ठ संख्या - २८ | अङ्क : ५३

समाचार संकेतिका

* साचिव्यम् 01-02
* महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान की स्थापना, उद्देश्य एवं प्राधिकरण 03-04
* प्रतिष्ठान के विभिन्न कार्यकलाप 04
* महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड को मान्यता 04-05
* वेदभूषण एवं वेदविभूषण की परीक्षा रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम संरचना 05-06
* प्रतिष्ठान की महासभा की 28वीं बैठक एवं शासी परिषद् की 48वीं बैठक 06-07
* माननीय केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री तथा प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का नई दिल्ली में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट शिखर-सम्मेलन 2026 का दौरा 07
* प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों का गतिविधि वृत्तान्त 08-11
* प्रतिष्ठान एवं पूर्णप्रज्ञ संशोधन मन्दिर, बेङ्गलूरु, कर्नाटक के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन 12-14
* क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन 14-17
* अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठियाँ 17-20
* द्वादश ज्योतिर्लिंगों में द्वादश सौमिक सुवृष्टि सोमयाग का आयोजन 20-22
* गणतन्त्र दिवस 2026 22-23
* ई-ऑफिस से सम्बन्धित कार्यशाला का आयोजन 23
* राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित भारतीय ज्ञान परम्परा' विषयक कार्यशाला 24-25
* प्रतिष्ठान में प्रवर्तमान निर्माण कार्यों का निरीक्षण 25
* वेद सम्बन्धित कौशल विकास एवं उद्यमिता पाठ्यक्रम (एनएसक्यूएफ स्तर 2.5 & 3.0) की परीक्षाएँ 25-26
* महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 की वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन एवं अनुलग्नक-1 26-27
* वित्तीय वर्ष 2025-26 में 65वीं परियोजना समिति से स्वीकृत उपरान्त प्रतिष्ठान के विविध कार्यक्रम 28

साचिव्यम्

प्रिय पाठको ! सृष्टि के समकाल में ऋषियों के पवित्र अंत:करण में जिस दिव्य ज्ञान का दर्शन हुआ, वही 'वेद' के रूप में समस्त मानवता के पथ को आलोकित कर रहा है। प्रतिष्ठान द्वारा अपने गतिविधियों में सस्वर वेदपाठ परम्परा को केन्द्र में रखकर वेदपाठी छात्रों, वेद अध्यापकों, वेद कार्य हितैषियों, वैदिकों, समस्त सज्जनों के लिए वैदिक कल्याण हेतु कार्य किए जा रहे हैं। इन कार्यों के सतत् राष्ट्र विकास, विकसित भारत-2047 एवं वैश्विक कल्याण तक विविध आयाम हैं। इन सभी आयामों पर कार्य किया जा रहा है। वेदवार्ता के माध्यम से प्रतिष्ठान की विविध गतिविधियों की जानकारी निरन्तर जनमानस तक पहुँच रही है। इसी क्रम में, इस आलोच्य अवधि में सम्पन्न प्रतिष्ठान की विविध उपलब्धियों एवं कार्यकलापों को इस अंक के माध्यम से आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है। प्रतिष्ठान की महासभा की 28वीं तथा शासी परिषद् की 48वीं बैठक दिनांक 02.03.2026 को नई दिल्ली में माननीय केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री एवं प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इसी क्रम में, माननीय अध्यक्ष महोदय की नई दिल्ली में आयोजित 'एआई इम्पैक्ट शिखर सम्मेलन 2026' में मार्गदर्शन एवं सहभागिता भी उल्लेखनीय रही। प्रतिष्ठान द्वारा संचालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों में आयोजित विविध गतिविधियों का विवरण भी इस अंक में समाविष्ट है। प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों में वैदिक सम्मेलन एवं वैदिक संगोष्ठियाँ विशेष स्थान रखते हैं तथा ये सम्पूर्ण देश में वैदिक ज्ञान के प्रचार-प्रसार के प्रमुख माध्यम हैं। इसी अनुक्रम में बेङ्गलूरु (कर्नाटक) में अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन तथा अहमदाबाद (गुजरात), अगरतला (त्रिपुरा) एवं जिन्दोली घाटी , खैरथल, अलवर (राजस्थान) में त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलनों का सफल आयोजन किया गया। इसी सातत्य में कुरुक्षेत्र (हरियाणा), द्वारका (गुजरात), नलबारी (असम) तथा उज्जैन (मध्यप्रदेश) में अखिल भारतीय वैदिक संगोष्ठियों का आयोजन किया गया, जिनमें वेद सम्बद्ध विविध विषयों पर गहन परिचर्चाएँ सम्पन्न हुईं।

वेदों में निहित ज्ञान-सम्पदा के अनुप्रयोग एवं अनुसन्धान को प्रोत्साहित करने तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के परिप्रेक्ष्य में सत्र 2026–27 हेतु द्वादश ज्योतिर्लिंगों में 'द्वादश सौमिक सुवृष्टि सोमयाग' आयोजित किए जा रहे हैं। यह सर्वविदित है कि गणतन्त्र की अवधारणा वैदिक चिंतन में निहित है; इसी भाव को आत्मसात् करते हुए विगत वर्षों की भाँति इस वर्ष भी प्रतिष्ठान परिसर में गणतन्त्र दिवस राष्ट्रीय गौरव एवं उल्लास के साथ मनाया गया। प्रतिष्ठान में ई-ऑफिस प्रणाली के कार्यान्वयन के अनुप्रयोग भी प्रारम्भ हो चुके हैं। इसके अन्तर्गत समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों हेतु ई-ऑफिस प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी अवधि में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु प्रतिष्ठान तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'शब्द-ब्रह्म के आलोक में भाषा, चेतना और भारतीय ज्ञान परम्परा' विषयक कार्यशाला का भव्य आयोजन किया गया। शैक्षणिक एवं आवासीय अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण के उद्देश्य से प्रचलित निर्माण कार्यों का निरीक्षण केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग के अपर महानिदेशक महोदय द्वारा किया गया। साथ ही, वेद सम्बद्ध कौशल विकास एवं उद्यमिता पाठ्यक्रम (एनएसक्यूएफ स्तर 2.5 एवं 3.0) की परीक्षाएँ तथा महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025–26 की वार्षिक परीक्षाओं का सफलतापूर्वक आयोजन भी इसी अवधि में सम्पन्न हुआ। प्रतिष्ठान वैदिक ज्ञान-परम्परा की अखण्डता एवं गौरव को अक्षुण्ण रखते हुए इसे समकालीन परिप्रेक्ष्य में प्रतिष्ठित करने हेतु निरन्तर प्रयत्नशील है। हमें विश्वास है कि यह साधना प्रगति-पथ पर सतत् अग्रसर रहेगी और मानवता के पथ को वेदज्ञान से आलोकित करती रहेगी।

प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्
सचिव, म.सा.रा.वे.वि.प्र., उज्जैन

• अध्यक्ष : **श्री धर्मेन्द्र प्रधान**
माननीय शिक्षा मन्त्री, भारत सरकार एवं
माननीय अध्यक्ष
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

• उपाध्यक्ष : **प्रो. हृदयरञ्जन शर्मा**
माननीय उपाध्यक्ष
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन

• प्रधान सम्पादक : **प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल्**
सचिव, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

• सम्पादक : **डॉ. अनूप कुमार मिश्र**
सहायक निदेशक, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

• सह-सम्पादक : **श्री देवाशीष तिवारी**
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

डॉ. शम्भुनाथ मण्डल
कनिष्ठ शोध अध्येता, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

• तकनीकी सहयोग : **श्री शैलेन्द्र डोडिया**
डी.ई.ओ., महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान

प्रकाशक :
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)
वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, पो.ऑ. जवासिया, उज्जैन (म.प्र.) 456006
दूरभाष : (0734) 2502254, 2502255
ई-मेल : msrvvpujn.edu@gov.in; msrvvpujn@gmail.com
वेबसाइट : www.msrvvp.ac.in

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान की स्थापना, उद्देश्य एवं प्राधिकरण

वेद अध्ययन की श्रुति / मौखिक परम्परा को संरक्षित, संवर्धित एवं विकसित करने के उद्देश्य से सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 (1860 की XXI) के अनुसार दिल्ली सें 20 जनवरी 1987 को संस्थापना स्मरणपत्र और नियमों के पंजीयन सं S-17451/1987 के अन्तर्गत "राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान" नामक स्वायत्त संस्थान का अखिल भारतीय सोसाइटी के रूप में गठन किया गया। प्रतिष्ठान की स्थापना को शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार ने संकल्प (Resolution) संख्या एफ. 6-3/85- संस्कृत-IV द्वारा दिनांक 30 मार्च 1987 को राजपत्र द्वारा प्रकाशित कर उद्घोषित किया। सस्वर वेदघोष के साथ श्रावण पूर्णिमा/रक्षाबन्धन/वेदारम्भ के पावन दिन में राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान का उद्घाटन 10.08.1987 को राष्ट्रीय संग्रहालय नई दिल्ली में हुआ।

महर्षि सान्दीपनि, जिन्होंने उज्जयिनी में अपने वेद-वेदाङ्ग-कला आदि विद्याओं का गुरुकुल की स्थापना कर भगवान् श्रीकृष्ण को समस्त वैदिक ज्ञान प्रदान किया था, उन के स्मरण में, मई 1993 में उज्जैन में स्थानान्तरित होने के उपरान्त महर्षि सान्दीपनि के स्मरण में "महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान" के नाम से भारत सरकार, शिक्षा मन्त्रालय की अधिसूचना संख्या F.6-21/92-संस्कृत-2 दिनांक 24.12.1993 द्वारा राजपत्र खण्ड-1, अनुभाग-1 में राजपत्र द्वारा उज्जैन में उद्घोषित हुआ। महाकाल ज्योतिर्लिङ्ग से दक्षिण दिशा में, जवासिया गांव में मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रदत्त 23.6 एकड़ भूखण्ड़ में प्रतिष्ठान का हरित परिसर है एवं विविध भवन निर्मित हैं।

प्रतिष्ठान की संस्थापना स्मरणपत्र में उल्लिखित 12 उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

(i) वेद अध्ययन की श्रुति-परम्परा का संरक्षण, परिरक्षण, संवर्धन एवं विकास, जिस के लिए प्रतिष्ठान विभिन्न कार्यकलाप प्रारम्भ करेगा। जैसा कि पारम्परिक वैदिक संस्थाओं और विद्वानों को सहायता, छात्रवृत्तियाँ आदि देना, दृश्य और श्रव्य टेप रिकार्डिंग आदि।

(ii) वेद विद्वानों एवं वेद पण्डितों के माध्यम से मौखिक सस्वर वेदपाठ की परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखना एवं उस पर बल देना।

(iii) वेद में उच्चतर शोध हेतु समर्पित विद्यार्थियों को प्रोत्साहन देना।

(iv) जिन विद्यार्थियों को वेद में निष्णता प्राप्त है, उन्हें शोध की सुविधाएं देना और उनमें समुचित वैज्ञानिक और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण उत्पन्न करना; जिससे कि वेदों में जो आधुनिक वैज्ञानिक ज्ञान है, विशेष रूप से गणित, खगोलशास्त्र, ऋतुविज्ञान, रसायनशास्त्र, द्रव्यचालिकी (हाइड्रोलिक्स) आदि के बारे में, उस का समसामयिकता/तादात्म्य आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से स्थापित किया जा सके साथ ही वेद विद्यार्थियों तथा आधुनिक विद्वानों के बीच घनिष्ठ वैचारिक सम्बन्ध स्थापित किया जा सके।

(v) देशभर में वेद पाठशालाओं और शोध केन्द्रों की स्थापना, उनका अधिग्रहण, प्रबन्ध चलाना या उनका पर्यवेक्षण या प्रतिष्ठान के किसी भी उद्देश्य के लिए उनका संचालन करना या भरण-पोषण आदि करना।

(vi) जो भी वेद के धर्मस्व या न्यास बन्द हो चुके हैं, या ठीक ढंग से नहीं चलाए जा रहे हैं, उनको फिर से उज्जीवित करना एवं वेद प्रसार हेतु उनका प्रबन्ध पुनः चलाना।

(vii) उन शाखाओं की ओर विशेष ध्यान देना जो लुप्त हो चुकी हैं, जिन के निपुण जानकार पण्डितों को खोजकर उन पण्डितों की व्यापक सूची तैयार करना।

(viii) यह पता लगाना कि वेदों की श्रुति-परम्परा में विशेष प्रकार के सस्वर वेद पाठ कौन-कौन से हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों, संस्थाओं और मठों में प्रचलित हैं तथा उन की वर्तमान स्थिति क्या है?

(ix) वेद शाखाओं की विभिन्न उच्चारण परम्पराओं की मूल-पाठ सामग्रियों, पाण्डुलिपियों के मुद्रण, ग्रन्थ, पुस्तकें, टीकाएँ, भाष्य एवं व्याख्याओं के बारे में जानकारी प्राप्त करना।

(x) देश में नाना वेद शाखाओं के दृश्य या श्रव्य रिकॉर्ड उपलब्ध हैं उन के बारे में जानकारी संग्रह करना।

(xi) अत्यन्त प्राचीन काल से अद्यतन काल तक वेद मूलपाठ एवं वैदिक साहित्य में निहित वैज्ञानिक ज्ञान, जिनमें विज्ञान, कृषि, प्रौद्योगिकी, दर्शन-शास्त्र, योग, शिक्षा, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान और वैदिक परम्परा के क्षेत्र सम्मिलित हैं, की उन्नति हेतु अनुसन्धान करना तथा ग्रन्थालय, अनुसन्धान सुविधाएँ, मानव शक्ति तकनीकी स्टाफ आदि का प्रावधान करना।

(xii) प्रतिष्ठान की संस्थापना स्मरणपत्र के अनुरूप, प्रतिष्ठान के सभी उद्देश्यों या उद्देश्य की सफल प्राप्ति हेतु आवश्यक, आनुषङ्गिक या सहायक सभी कार्यकलाप प्रारम्भ करना ।

महासभा, शासी परिषद एवं वित्त समिति प्रतिष्ठान के प्राधिकरण हैं। भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री जी प्रतिष्ठान के योजना निकाय महासभा एवं प्राशासनिक निकाय शासी परिषद के अध्यक्ष हैं। भारत सरकार के माननीय शिक्षा मंत्री जी द्वारा माननीय उपाध्यक्ष जी नामित किए जाते हैं। माननीय उपाध्यक्ष जी वित्त समिति एवं परियोजना समिति के माननीय अध्यक्ष हैं।

प्रतिष्ठान के विभिन्न कार्यकलाप

प्रतिष्ठान द्वारा देश भर में वेद के प्रचार-प्रसार के लिये- वेद पाठशालाओं, गुरु शिष्य परम्परा इकाइयों, राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, शोध एवं प्रकाशन, सम्मेलन, संगोष्ठी, कार्यशाला, वेद पारायण, पुनश्चर्या पाठ्यक्रम, वेद प्रशिक्षण, वेद ज्ञान सप्ताह, वैदिक कक्षाएँ, वेद टेप रिकार्डिंग, घर बैठे वेदों की शिक्षा, वयोवृद्ध एवं वेद पाठियों-नित्याग्निहोत्रियों को वित्तीय सहायता आदि योजनागत कार्य किए जाते हैं । प्रतिष्ठान द्वारा वैदिक परम्परा के सरंक्षण के लिए संचालित योजनाएँ :-

1. वैदिक सस्वर उच्चारण की मौखिक परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने की योजना (गुरु शिष्य योजना एवं पाठशाला योजना)
2. वेद शोध केन्द्र
3. वैदिक प्रशिक्षण केन्द्र
4. राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय
5. वैदिक सामग्री संग्रहालय
6. वेद-विज्ञान प्रदर्शनी
7. शोध, प्रकाशन एवं पुस्तकालय
8. यज्ञशाला एवं ध्यान मंडप गतिविधियां
9. वेद ज्ञान सप्ताह समारोह
10. सभी के लिये वैदिक कक्षाएँ
11. वैदिक सम्मेलन एवं संगोष्ठियाँ
12. वैदिकों के लिए पुनश्चर्या पाठ्यक्रम
13. सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या पुरस्कार
14. वेदविद्या शोध पत्रिका एवं वेदवार्ता वार्तापत्र
15. पत्राचार पाठ्यक्रम : घर बैठे वेदों की शिक्षा
16. वयोवृद्ध वेदपाठियों, नित्याग्निहोत्रियों को वित्तीय सहायता
17. वैदिक वनौषधि परियोजना
18. वैदिक कौशल विकास परियोजना

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड को मान्यता

क. शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा मान्यता

शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने दिनांक 08.09.2022 के अपने पत्र सं.3-14/2018-Skt.I के माध्यम से महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड (मसारावेसंशिबोर्ड) को एक नियमित विद्यालय बोर्ड के रूप में मान्यता प्रदान की है। तदनुसार, मसारावेसंशिबोर्ड द्वारा प्रदत्त वेद भूषण पञ्चम वर्ष (कक्षा 10वीं) और वेद विभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा 12वीं) प्रमाणपत्र हमारे देश में स्थित उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश और केन्द्र / राज्य सरकारों के संस्थानों/निकायों में रोजगार के प्रयोजन से भारत के अन्य केन्द्र/राज्य विद्यालय बोर्डों द्वारा प्रदत्त प्रमाणपत्रों के समतुल्य हैं।

(लिंक 1:https://msrvvp.ac.in/Board_letter_from_ME_MOE.pdf;

लिंक 2 : https://www.education.gov.in/national-boards)

ख. भारतीय विश्वविद्यालय संगठन द्वारा मान्यता

भारतीय विश्वविद्यालय संगठन ने 03 अगस्त 2022 के अपने पत्र सं. AIU/EV/ IN(I)2022/ MSRVSSB के माध्यम से मसारावेसंशिबोर्ड की परीक्षाओं/अर्हताओं/पाठ्यक्रमों को भारत में उच्चतर शिक्षण संस्थानों / पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए और केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों के अधीन रोजगार के प्रयोजन से केन्द्र / राज्य विद्यालय बोर्डों के 10वीं और 12वीं बोर्ड/माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर की परीक्षाओं/अर्हताओं/पाठ्यक्रमों के समतुल्यता प्रदान की है।

(लिंक 1: https://msrvvp.ac.in/AIU-Letter.pdf ;

लिंक 2: https://msrvvp.ac.in/Equivalence_Letter_from_AIU_250124_214435.pdf)

ग. अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद द्वारा मान्यता

अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद ने दिनांक 13-09-2022 के अपने परिपत्र सं. AICTE/P&AP/Misc/2022 के माध्यम से मसारावेसंशिबोर्ड की स्थापना को मान्यता प्रदान की है और मसारावेसंशिबोर्ड, उज्जैन द्वारा संचालित 10वीं ओर 12वीं ग्रेड की बोर्ड परीक्षा / अर्हता/ पाठ्यक्रमों को भारत में उच्चतर शिक्षण संस्थानों / पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए और केन्द्र सरकार तथा राज्य सरकारों के अधीन रोजगार के प्रयोजन से भारत के अन्य केन्द्र/राज्य विद्यालय बोर्डों द्वारा संचालित परीक्षा/अर्हता के समतुल्यता प्रदान की है।

वेद भूषण अर्थात् पञ्चम वर्ष (10 वीं कक्षा) और वेद विभूषण अर्थात् सप्तम वर्ष (12वीं कक्षा) हेतु बोर्ड की अंक तालिका विद्यार्थियों को 2022-23 से जारी की जा रही है।

(लिंक: https://msrvvp.ac.in/Circular_paP_220924_115837.pdf)

घ. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) ने 03 सितम्बर 2024 के अपने पत्र अ.शा. सं. 14-2/2023(CPP-II) (C-133004) के माध्यम से सभी विश्वविद्यालयों और उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों से अनुरोध किया था कि उच्चतर शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश और केन्द्र/राज्य सरकारों के संस्थानों में रोजगार के प्रयोजन से अन्य केन्द्र/राज्य विद्यालय बोर्डों द्वारा संचालित परीक्षा/अर्हता/पाठ्यक्रमों के साथ महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान (मसारावेविप्र) के अधीन महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड (मसारावेसंशिबोर्ड), उज्जैन द्वारा संचालित 10वीं और 12वीं ग्रेड की बोर्ड परीक्षा/अर्हता/पाठ्क्रमों की समतुल्यता के संदर्भ में शिक्षा मंत्रालय द्वारा 08 अगस्त 2022 के कार्यालय ज्ञापन का ध्यान रखने और इसके अनुसरण में आवश्यक कार्रवाई करने का अनुरोध किया।

(लिंक : https://msrvvp.ac.in/ugc_recognition.pdf)

वेदभूषण एवं वेदविभूषण की परीक्षा रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम संरचना

वेदभूषण (कक्षा-6ठी से कक्षा-10वीं) तथा वेदविभूषण (कक्षा-11वीं एवं कक्षा -12वीं) की परीक्षा रूपरेखा और पाठ्यक्रम संरचना को अत्यंत ध्यानपूर्वक इस प्रकार तैयार किया गया है कि वेद छात्रों की वैदिक एवं आधुनिक विषयों की अधिगम प्रगति, पारम्परिक दक्षता तथा सर्वांगीण विकास का समुचित मूल्यांकन किया जा सके।

पाठ्यक्रम में पारम्परिक वैदिक शिक्षा एवं आधुनिक शैक्षणिक विषयों का समन्वय किया गया है, ताकि विद्यार्थियों को संतुलित एवं समग्र शैक्षिक अनुभव प्राप्त हो सके। जहाँ आधुनिक विषयों की शैक्षणिक सामग्री सीबीएसई तथा राज्य शिक्षा बोर्डों के मानकों के अनुरूप पूर्णतः सामंजस्यित है, वहीं वैदिक अध्ययन (वेद अध्यायन) अब भी प्राचीन एवं प्रतिष्ठित परम्परागत गुरुकुल पद्धति के अनुरूप ही कराया जाता है जिसमें चयन की गई वेद शाखा का सस्वर वेद अध्ययन, संध्या, अग्निकार्य, वेद पारायण, श्रीमद्भगवद्गीता का पाठ तथा यज्ञ में सहभागिता सम्मिलित हैं, जिससे वैदिक परम्परा की प्रामाणिकता, अनुशासन तथा मौखिक संप्रेषण की पारम्परिक पद्धति अक्षुण्ण बनी रहती है। यह समन्वित दृष्टिकोण राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के अनुरूप है, जो भारत की समृद्ध पारम्परिक ज्ञान-परम्पराओं को आधुनिक शिक्षा के साथ एकीकृत करने पर बल देती है।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड (मसारावेसंशिबोर्ड) के पाठ्यक्रम एवं पाठ्यविवरण को NCERT द्वारा परीक्षित एवं पुनरीक्षित तथा संबद्धता उपविधि तथा परीक्षा उपविधि को CBSE द्वारा पुनरीक्षित किया गया है, जिससे राष्ट्रीय शैक्षणिक विश्वसनीयता तथा स्थापित शैक्षिक मानकों के अनुपालन की सुनिश्चित होती है। उपविधियों/पाठ्यक्रम को आवश्यकतानुसार राष्ट्रीय मानकों के अनुसार समय-समय पर अद्यतन किया जाएगा।

वेदभूषण एवं वेदविभूषण की परीक्षा प्रणाली के निम्नलिखित घटक हैं :

1. सस्वर वेद मौखिक परीक्षा, जिसका उद्देश्य पारम्परिक वैदिक अध्ययन की मूल दक्षताओं का मूल्यांकन करना है, जिसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

(I) कंठस्थीकरण – वेद मंत्रों के परिशुद्ध स्मरण क्षमता का परीक्षण;

(ii) सस्वर पाठ – सही अनुतान, उच्चारण एवं वैदिक मंत्रोच्चार के निर्धारित पाठ-पद्धति के पालन का आकलन;

(iii) उच्चारण – वैदिक मानकों के अनुसार ध्वन्यात्मक शुद्धता सुनिश्चित करना।

2. सहगामी आधुनिक विषयों की लिखित परीक्षा, जिसमें संस्कृत, अंग्रेज़ी, सामाजिक विज्ञान, गणित, विज्ञान, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा वैदिक साहित्य का इतिहास जैसे विषय सम्मिलित हैं। ये परीक्षाएँ छात्रों की मुख्यधारा के शैक्षणिक विषयों में प्रवीणता का मूल्यांकन करती हैं, जिससे वे वैदिक अध्ययन के साथ-साथ समकालीन शैक्षिक मानकों को भी प्राप्त कर सकें।

3. अतिरिक्त विषयों की परीक्षा, जिसमें मातृभाषा, योग एवं ध्यान, कम्प्यूटर शिक्षा, सामाजिक रूप से उपयोगी उत्पादक कार्य (SUPW), व्यक्तित्व विकास तथा नैतिक शिक्षा सम्मिलित हैं। ये विषय वैदिक छात्रों के समग्र विकास में योगदान करते हैं क्योंकि ये उनकी सांस्कृतिक आधारशिला को सुदृढ़ करते हैं, डिजिटल साक्षरता को बढ़ाते हैं, शारीरिक एवं मानसिक कल्याण को संवर्धित करते हैं, सामाजिक दायित्वबोध विकसित करते हैं तथा मूल्य-आधारित चरित्र निर्माण को सशक्त बनाते हैं।

4. वेद-संबंधित कौशल विकास एवं उद्यमिता पाठ्यक्रमों की परीक्षा: इन परीक्षाओं में लिखित, प्रायोगिक, मौखिक परीक्षा (Viva-Voce) तथा परियोजना कार्य घटक के रूप में सम्मिलित हैं। ये सभी घटक वैदिक छात्रों के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक जीवन-कौशल, व्यावसायिक दक्षताओं, विश्लेषणात्मक चिंतन तथा व्यावहारिक ज्ञान को विकसित करने के उद्देश्य से अभिकल्पित हैं।

प्रतिष्ठान की महासभा की 28वीं बैठक एवं शासी परिषद् की 48वीं बैठक

श्री धर्मेन्द्र प्रधान, माननीय शिक्षा मन्त्री जी एवं प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष महोदय जी की अध्यक्षता में दिनांक 02.03.2026 को नई दिल्ली में महासभा की 28 वीं बैठक एवं शासी परिषद् की 48वीं बैठक आयोजित की गई। माननीय अध्यक्ष महोदय ने इन बैठकों में विशेष रूप से इस बात पर बल दिया कि वेद केवल अध्ययन–अध्यापन की परिधि तक सीमित न रहकर व्यापक जनमानस तक पहुँचे। इस उद्देश्य से विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से जनमानस को वेदों के महत्त्व, उनके वैज्ञानिक, मानवीय पक्ष तथा उनके जीवनोपयोगी संदेश से परिचित कराया जाए। अध्यक्ष महोदय जी ने यह भी उल्लेख किया कि संस्कृत भाषा से जुड़ी संस्थाओं का विशेष दायित्व है कि वे संस्कृत को केवल भाषा और साहित्य के रूप में ही सीमित न रखें, बल्कि उसे मानवोपयोगी समस्त ज्ञान भण्डार के रूप में तथा उस ज्ञान भण्डार को जनमानस में प्रतिष्ठित करने के लिए भी प्रयास करें। भारतीय भाषाओं में संस्कृत ग्रन्थों का केवल अनुवाद करने से पूर्णता प्राप्त नहीं होगी। इसके लिए संस्कृत एवं भारतीय ज्ञान को जन अभियान के रूप में विकसित करना होगा, जिसमें विद्यार्थियों, अध्यापकों, शोधार्थियों तथा समाज के समस्त नागरिकों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की जाए। संस्कृत के अध्ययन को आधुनिक आवश्यकताओं के अनुरूप बनाकर अधिकाधिक लोगों को इससे जोड़ा जाए।

इसके अतिरिक्त उन्होंने यह भी सुझाव दिया कि वर्तमान तकनीकी युग की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वेदाध्ययन कर रहे सभी विद्यार्थियों को कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) तथा डिजिटल तकनीकों के प्रति जागरूक और दक्ष बनाया जाए। इससे वैदिक छात्र न केवल आधुनिक ज्ञान प्रणालियों से परिचित होंगे, बल्कि वैदिक साहित्य के संरक्षण, डिजिटलीकरण और वैश्विक प्रसार में भी महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकेंगे। इस प्रकार परम्परागत वैदिक ज्ञान और आधुनिक प्रौद्योगिकी के समन्वय से ज्ञान–विस्तार की नई संभावनाएँ खुलेंगी तथा भारतीय ज्ञान परम्परा को विश्वपटल पर और अधिक प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जा सकेगा।

महासभा के सम्माननीय सदस्यों ने सुवृष्टि सोमयाग के आयोजन पर विशेष चर्चा की तथा इसमें वैज्ञानिक प्रयोगों को निरन्तर रखने के लिए अपना अभिमत व्यक्त किया।

माननीय केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री तथा प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी का नई दिल्ली में आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट शिखर-सम्मेलन 2026 का दौरा

माननीय केन्द्रीय शिक्षा मन्त्री तथा प्रतिष्ठान के माननीय अध्यक्ष श्री धर्मेन्द्र प्रधान जी ने नई दिल्ली में आयोजित एआई इम्पैक्ट शिखर-सम्मेलन 2026 का दौरा किया एवं शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार द्वारा दिनांक 17.02.2026 को आयोजित "शिक्षा मन्त्रालय - भारत में एआई का दायरा बढ़ाना" विषयक एक विशेष सत्र में अपनी उपस्थिति से इस कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। अपने दौरे के दौरान माननीय अध्यक्ष जी ने शिखर-सम्मेलन में प्रदर्शित कृत्रिम बुद्धिमत्ता से सम्बन्धित नवीनतम प्रौद्योगिकियों और नवाचारों का अवलोकन किया। अपने सम्बोधन में उन्होंने भारत की ज्ञान प्रणाली को सुदृढ़ करने, शिक्षण प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाने तथा नवाचार आधारित विकास को प्रोत्साहित करने हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता के उपयोग की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि भारत की समृद्ध भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक प्रौद्योगिकियों जैसे कृत्रिम बुद्धिमत्ता के साथ समन्वय कर वैश्विक उपयोग हेतु एक समग्र एवं भविष्योपयोगी ज्ञान ढाँचा विकसित किया जा सकता है। माननीय अध्यक्ष जी ने विशेषज्ञों, विभिन्न स्टार्टअप्स के प्रतिनिधियों आदि के साथ संवाद करते हुए उनके प्रयासों की सराहना की तथा एक तकनीकी रूप से सशक्त और भविष्य उन्मुख भारत के निर्माण में उनकी भूमिका को महत्त्वपूर्ण बताया।

प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालयों का गतिविधि वृत्तान्त

क. राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन (म.प्र.) में विविध वैदिक, शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। दिनाङ्क 23.01.2026 को वसंत पञ्चमी के पावन अवसर पर विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की आराधना की गई। इस अवसर पर राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के अध्यापकों एवं छात्रों ने सरस्वती पूजन कर सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित सभी के लिए वेद कक्षा के अन्तर्गत दिनाङ्क 17.01.2026 को राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के परिसर में श्री विभाष उपाध्याय ने 'महर्षि अरविन्द की वेद व्याख्या पद्धति' विषयक व्याख्यान दिया। दिनाङ्क 26.01.2026 को गणतन्त्र दिवस अत्यन्त गरिमामय वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर ध्वजोत्तोलन कर भारतीय तिरंगे को नमन किया गया। प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित सभी के लिए वेद कक्षा के अन्तर्गत दिनाङ्क 01.02.2026 को राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, उज्जैन के परिसर में प्रो. दयाशंकर तिवारी, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली ने 'वैदिक वाङ्मय में विज्ञान' विषयक व्याख्यान दिया। दिनाङ्क 09.02.2026 को आयोजित 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम में माननीय प्रधानमन्त्री जी के उद्बोधन एवं मार्गदर्शन को सभी छात्रों, अध्यापकों आदि द्वारा उत्साहपूर्वक सुना व देखा गया। इसके पश्चात् दिनाङ्क 15.02.2026 को महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के अध्यापकों एवं छात्रों द्वारा महाअभिषेक किया गया तथा सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई। दिनाङ्क 19.02.2026 को विद्यालय परिसर में 'आर्ट एवं क्राफ्ट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत छात्रों ने पेपर कटिंग के माध्यम से विभिन्न कलात्मक रचनाएँ बनाने की विधियाँ सीखी। दिनाङ्क 04.03.2026 को होली का पर्व बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। सभी छात्र एवं अध्यापकगण ने परस्पर शुभकामनाएँ देते हुए अबीर-गुलाल के साथ इस उत्सव को आनन्दपूर्वक मनाया। दिनाङ्क 19.03.2026 (चैत्र प्रतिपदा) के पावन अवसर पर विद्यालय में भारतीय नववर्ष अत्यन्त श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया।

ख. श्री जगन्नाथ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, पुरी (ओडिशा)

प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित श्री जगन्नाथ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, पुरी (ओडिशा) में विविध वैदिक, शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। दिनाङ्क 23 से 25 जनवरी 2026 तक वसंतोत्सव के अन्तर्गत सरस्वती पूजन का आयोजन किया गया। दिनाङ्क 26.01.2026 को गणतन्त्र दिवस अत्यन्त गरिमामय वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर ध्वजोत्तोलन कर भारतीय तिरंगे को नमन किया गया। दिनाङ्क 09.02.2026 को आयोजित 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम में माननीय प्रधानमन्त्री जी के उद्बोधन एवं मार्गदर्शन को सभी छात्रों और अध्यापकों द्वारा उत्साहपूर्वक सुना व देखा गया। इसके पश्चात् दिनाङ्क 15.02.2026 को

महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर शिवार्चन, अभिषेक तथा चतुर्वेद स्वस्तिवाचन का आयोजन किया गया। दिनाङ्क 02.03.2026 को वेदविभूषण द्वितीय वर्ष के विद्यार्थियों को भगवान् जगन्नाथ के दर्शन कराए गए तथा श्री जगन्नाथ राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, पुरी हेतु प्राप्त भूमि पर भगवान नर्मदेश्वर का पूजन, अभिषेक एवं प्रसाद वितरण किया गया। दिनाङ्क 04.03.2026 को होली पर्व पर समस्त छात्रों तथा अध्यापकों ने परस्पर शुभकामनाएँ देते हुए अबीर-गुलाल के साथ इस उत्सव को आनन्दपूर्वक मनाया। दिनाङ्क 19.03.2026 (चैत्र प्रतिपदा) के पावन अवसर पर विद्यालय में भारतीय नववर्ष अत्यन्त श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया।

ग. राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, द्वारका (गुजरात)

प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, द्वारका (गुजरात) में विविध वैदिक, शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। दिनाङ्क 14.01.2026 को मकर संक्रान्ति/उत्तरायण पर्व के अवसर पर समस्त छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा पतंगोत्सव मनाया तथा तिल के लड्डुओं का वितरण किया। दिनाङ्क 22.01.2026 को वसंत पञ्चमी के पावन अवसर पर विद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ सरस्वती की आराधना की गई। दिनाङ्क 26.01.2026 को राष्ट्रीय पर्व गणतंत्र दिवस के अवसर पर ध्वजोत्तोलन किया गया तथा नगर में प्रभात फेरी का आयोजन किया गया। दिनाङ्क 06.02.2026 को शारदापीठ में आयोजित वैदिक संगोष्ठी एवं वेद शोभा यात्रा में सभी छात्रों एवं अध्यापकों की सहभागिता रही। दिनाङ्क 09.02.2026 को आयोजित 'परीक्षा पे चर्चा' कार्यक्रम में माननीय प्रधानमन्त्री जी के उद्बोधन एवं मार्गदर्शन को सभी छात्रों और अध्यापकों द्वारा उत्साहपूर्वक सुना व देखा गया। दिनाङ्क 15.02.2026 को महाशिवरात्रि के उपलक्ष्य में समस्त छात्रों एवं अध्यापकों द्वारा विश्वशांति हेतु पूजन-अर्चन सम्पन्न किया गया। इसके उपरान्त दिनाङ्क 03.03.2026 को होली का उत्सव द्वारकाधीश मंदिर प्रांगण में अबीर-गुलाल के साथ हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया तथा दिनाङ्क 11.03.2026 को सभी छात्रों एवं गुरुजनों द्वारा क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दिनाङ्क 19.03.2026 (चैत्र प्रतिपदा) के पावन अवसर पर विद्यालय में भारतीय नववर्ष अत्यन्त श्रद्धा एवं उत्साह के साथ मनाया गया।

घ. राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, कर्नाटक

प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, कर्नाटक में विविध वैदिक, शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। दिनाङ्क 23.01.2026 को वसंत पञ्चमी के पावन अवसर पर समस्त छात्रों एवं अध्यापकों की उपस्थिति में सर्ववेद शाखा पारायण का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वातावरण वैदिक मन्त्रोच्चार से गुंजायमान रहा, जिससे सभी उपस्थित जनों में आध्यात्मिक चेतना एवं श्रद्धाभाव का संचार हुआ। तत्पश्चात् दिनाङ्क 26.01.2026 को गणतन्त्र दिवस अत्यन्त गरिमामय वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर ध्वजोत्तोलन कर भारतीय तिरंगे को नमन किया गया। दिनाङ्क 15.02.2026 को महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय कर्नाटक में सभी छात्रों व अध्यापकों ने साथ मिलकर महाशिवरात्रि पर भगवान् शिव का पूजन तथा रुद्राभिषेक किया। इस अवसर पर समस्त छात्रों एवं अध्यापकों की श्रद्धा एवं भक्ति भाव से सहभागिता रही। इसके उपरान्त दिनाङ्क 04.03.2026 को होली का पर्व बड़े हर्षोल्लास एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में मनाया गया। सभी छात्रों एवं अध्यापकों ने परस्पर शुभकामनाएँ देते हुए अबीर-गुलाल के साथ इस उत्सव को आनन्दपूर्वक मनाया तथा दिनाङ्क 19.03.2026 को सभी के द्वारा भारतीय नववर्ष का उत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

ङ. राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, गुवाहाटी (असम)

प्रतिष्ठान द्वारा सञ्चालित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, गुवाहाटी (असम) में विविध वैदिक, शैक्षणिक एवं सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। दिनाङ्क 01.01.2026 को राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, गुवाहाटी में प्रदोष पारायण समस्त अध्यापकों एवं छात्रों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। दिनाङ्क 03.01.2026 को रा.आ.वे.वि, गुवाहाटी में पूर्णिमा तिथि पर यज्ञशाला में सभी अध्यापकगण अपने-अपने वेद शाखानुसार जिसमें शु.य. काण्व शाखा से श्री ऋषिकेश पोखरकर , शु.य. माध्यन्दिन शाखा से श्री शिवम तिवारी, सामवेद कौथुम शाखा से श्री नन्दलाल श्रोत्रिय एवं अथर्ववेद शौनक शाखा से श्री लक्ष्मीकांत जोशी समेत समस्त अध्यापकों द्वारा वेद पारायण सम्पन्न किया। प्रतिष्ठान के सचिव महोदय दिनाङ्क 03 से 07 जनवरी 2026 तक राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय, गुवाहाटी में विद्यालय की शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं भौतिक व्यवस्थाओं का गहन निरीक्षण किया। उन्होंने भवन निर्माण कार्य को शीघ्र प्रारंभ कराने के निर्देश दिए तथा कक्षाओं, छात्रावास, रसोईघर, स्वच्छता, पेयजल एवं अनुशासन व्यवस्था का अवलोकन कर आवश्यक सुधारात्मक सुझाव दिए। विद्यालय परिसर के विकास हेतु वृक्षारोपण एवं स्वच्छता कार्य पर विशेष ध्यान देते हुए इन कार्यों में सक्रिय सहभागिता की। उन्होंने अध्यापकों एवं छात्रों से संवाद कर शैक्षणिक गुणवत्ता एवं छात्रहित पर मार्गदर्शन दिया। छात्रों से संवाद करते हुए उन्होंने संस्कृत श्लोकों के माध्यम से संस्कृत भाषा के महत्त्व को समझाया। उनका यह प्रवास विद्यालय के समग्र विकास के लिए अत्यन्त लाभकारी एवं प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

दिनाङ्क 16.01.2026 को प्रदोष पारायण का आयोजन किया गया जिसमें अथर्ववेद शौनक शाखा के श्री लक्ष्मीकांत जोशी समेत समस्त अध्यापकों एवं छात्रों की सहभागिता रही। दिनाङ्क 18.01.2026 को प्रतिष्ठान के नियमानुसार अमावस्या को शुक्ल यजुर्वेद काण्व शाखा, शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा, सामवेद कौथुम शाखा, अथर्ववेद शौनक शाखा का पारायण समस्त अध्यापकों एवं छात्रों द्वारा सम्पन्न किया गया। दिनाङ्क 23.01.2026 को वसंत पञ्चमी के पावन अवसर पर श्रद्धापूर्वक सरस्वती पूजन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यालय के सभी छात्र एवं अध्यापकगण उपस्थित रहे। दिनाङ्क 26.01.2026 को गणतन्त्र दिवस बड़े हर्षोल्लास, सम्मान एवं गरिमा के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ ध्वजोत्तोलन एवं राष्ट्रगान के साथ किया तथा कार्यक्रम के अन्तर्गत देशभक्ति गीत, भाषण एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आयोजन किया गया, जिससे वातावरण राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत-प्रोत हो उठा। इस शुभ अवसर पर विद्यालय के सभी छात्र-अध्यापक एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। दिनाङ्क 30.01.2026 को प्रदोष के अवसर पर समस्त वेदाध्यापक एवं छात्रों ने मिलकर स्व-स्व शाखा का वेद पारायण किया।

इसी सातत्य में दिनाङ्क 06.02.2026 को राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय गुवाहाटी की सञ्चालन समिति की ऑनलाइन बैठक हुई। उक्त बैठक में आगामी वार्षिक परीक्षा की तैयारी, आवश्यक शैक्षणिक एवं तकनीकी व्यवस्थाओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई।साथ ही विद्यालय की शैक्षणिक प्रगति एवं ऑनलाइन शिक्षण व्यवस्था की समीक्षा भी की गई। दिनाङ्क 08.02.2026 को सचिव महोदय एवं उनके साथ आए अतिथियों का आगमन हुआ। सचिव महोदय ने छात्रों को शिक्षा और अनुशासन का महत्त्व बताया तथा उन्हें आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। दिनाङ्क 09.02.2026 को माननीय प्रधानमन्त्री जी द्वारा आयोजित " परीक्षा पे चर्चा" का कार्यक्रम विद्यालय के छात्रों को ऑनलाइन माध्यम से दिखाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने बड़े उत्साह के साथ कार्यक्रम को देखा और माननीय प्रधानमन्त्री जी के प्रेरणादायक विचारों को ध्यानपूर्वक सुना। दिनाङ्क 14.02.2026 को प्रदोष पारायण शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन के छात्र एवं अध्यापक श्री शिवम तिवारी एवं विद्यालय के समस्त अध्यापकों तथा छात्रों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। दिनाङ्क 15.02.2026 को महाशिवरात्रि के पावन अवसर पर विद्यालय परिसर में भगवान शिव का पूजन एवं रुद्राभिषेक सम्पन्न किया गया। दिनाङ्क 17.02.2026 को प्रतिष्ठान के नियमानुसार विद्यालय परिसर में अमावस्या को चतुर्वेद पारायण-शुक्ल यजुर्वेद काण्व शाखा, शुक्ल यजुर्वेद माध्यन्दिन शाखा, सामवेद कौथुम शाखा एवं अथर्ववेद शौनक शाखा का पारायण सभी वेदाध्यापकों एवं छात्रों की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। दिनाङ्क 01.03.2026 को समस्त वेदाध्यापकों एवं छात्रों ने विद्यालय परिसर में आयोजित प्रदोष पारायण में भाग लिया। दिनाङ्क 04.03.2026 को विद्यालय के छात्रों, अध्यापकों एवं कर्मचारियों ने होली की परस्पर शुभकामनाएँ देते हुए अबीर-गुलाल के साथ होली का उत्सव मनाया तथा दिनाङ्क 19.03.2026 को सभी के द्वारा भारतीय नववर्ष का उत्सव हर्षोल्लासपूर्वक मनाया गया।

प्रतिष्ठान एवं पूर्णप्रज्ञ संशोधन मन्दिर, बेङ्गलूरु, कर्नाटक के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान (MSRVVP), शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा पूर्णप्रज्ञसंशोधनमन्दिरम्, बेंगलुरु एवं कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बेंगलूरु के सहयोग से दिनांक 16-18 मार्च 2026 तक त्रि-दिवसीय अखिल भारतीय वेद सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन बेंगलुरु में हुआ । इस सम्मेलन में देशभर से 125 से ज्यादा मूर्धन्य सस्वरवेदपाठी वेदाचार्य, वेदपाठी छात्र, वेद गुरुकुल प्रतिनिधि तथा प्रसिद्ध संस्कृत विद्वानों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

सम्मेलन को श्री श्री विश्वप्रसन्नतीर्थ स्वामी जी, पेजावर मठ, उडुपि (एवं पूर्णप्रज्ञसंशोधनमन्दिरम्, बेंगलुरु के संरक्षक, श्रीराममन्दिरट्रस्ट, अयोध्या के ट्रस्टी), प्रो. रामचन्द्र जी. भट्ट कोटेमने, (पूर्व कुलपति, विवेकानन्द योग विश्वविद्यालय), डॉ. महाबलेश्वर भट्ट, (प्राचार्य, वेदविज्ञानगुरुकपुलम्), डॉ. एस. कुमार, (रजिस्ट्रार्, संस्कृतसंग्रोधनसंसत्,मेलुकोटे), प्रो. वीरनारायण पांडुरंगी, (निदेशक पूर्णप्रज्ञसंशोधनमन्दिरम्) तथा प्रो. सत्यनारायणाचार्य (प्राचार्य, पूर्णप्रज्ञविद्यापीठम्) विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित रहे। प्रतिष्ठान (MSRVVP) के सचिव प्रो. विरूपाक्ष वि जड्डीपाल् भी उपस्थित थे।

श्री श्री विश्वप्रसन्नतीर्थ स्वामी जी के दिव्य सान्निध्य में, गरिमामयी उपस्थिति एवं दिव्य आशीर्वादों से सम्मेलन का उद्घाटन हुआ। उद्घाटन सत्र में श्री श्रीविश्वप्रसन्नतीर्थ स्वामी जी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि वेद अध्ययन जीवन का तप है। वेद की स्वशाखा का अध्ययन ही तप है। उन्होंने कर्नाटक की वैदिक परम्परा के लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि यह प्रदेश प्राचीन काल से ही वेदाध्ययन, गुरुकुल परम्परा तथा संस्कृत साधना का प्रमुख केन्द्र रहा है। उन्होंने विशेष रूप से पेजावर मठ के योगदान का उल्लेख करते हुए बताया कि इस मठ ने वेदाध्ययन, वेदपाठी, शास्त्र अध्ययन कर रहे छात्रों के संरक्षण एवं वैदिक संस्कारों के संवर्धन में सतत् महत्वपूर्ण कार्य किया है। स्वामीजी ने महान आचार्य श्री श्री मध्वाचार्य जी का स्मरण करते हुए कहा कि उन्होंने ऋग्वेद पर भाष्य निर्माणकर वैदिक साहित्य की व्याख्या एवं दर्शन को नई दिशा प्रदान की, जो आज भी वेद अध्ययन के क्षेत्र में मार्गदर्शक है।

उद्घाटन सत्र में महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान (MSRVVP) के सचिव प्रो. विरूपाक्ष वि जड्डीपाल् ने अपने उद्बोधन में वेदों के प्रचार-प्रसार में महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के योगदान पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने वेदों के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि वेद केवल धार्मिक ग्रन्थ नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन, नैतिकता एवं सांस्कृतिक एकता के मूलाधार हैं, "वेद की रक्षा, देश की रक्षा" है। साथ ही वेद मानव जीवन के आध्यात्मिक, सामाजिक एवं बौद्धिक सभी आयामों को दिशा प्रदान करते हैं।

इसी क्रम में प्रो. रामचन्द्र भट्ट जी ने कहा कि वेदों के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए "योगानुकूल परिवर्तन" आवश्यक है। उन्होंने स्पष्ट किया कि परम्परागत मूल्यों को अक्षुण्ण रखते हुए समयानुकूल पद्धतियों, तकनीकी साधनों तथा आधुनिक शिक्षण विधियों को अपनाना चाहिए, जिससे वेद अध्ययन अधिक सुलभ एवं प्रभावी

बन सके और युवा पीढ़ी इससे जुड़ सके। उन्होंने बहुत प्राचीन काल से महान राजाओं, शासकों द्वारा वेद एवं शास्त्रों को दिए गए संरक्षण का उल्लेख किया। साथ ही कर्नाटक के विभिन्न मठों, वेदभवन गोकर्ण के योगदान को भी रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि वेदों का प्रयोग एक वैज्ञानिक प्रयोग है, जैसे यज्ञों का आयोजन जिससे विविध रोगों का उपशमन होता है । इस पर विविध प्रयोग किये गये हैं तथा वैज्ञानिक शोध पत्र प्रकाशित किये गये हैं। इस प्रक्रिया को आगे बढाने से वेदों का व्यापक प्रचार-प्रसार हो सकेगा। सम्मेलन के शैक्षिक सत्रों में प्रो. सत्यनारायण आचार्य ने वेदाध्ययन एवं भाष्य-परम्परा का सजीव प्रदर्शन प्रस्तुत करते हुए स्पष्ट किया कि केवल वेदपाठ पर्याप्त नहीं है, बल्कि भाष्य एवं वेदाङ्गों के माध्यम से उसके अर्थ का गहन अध्ययन आवश्यक है।

इसी क्रम में डा. महाबलेश्वर भट्ट जी ने अपने उद्बोधन में वेद पाठशालाओं के पारम्परिक वातावरण का जीवन्त चित्रण प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि इन पाठशालाओं में अनुशासन, साधना एवं गुरु-शिष्य परम्परा के माध्यम से विद्यार्थियों का समग्र व्यक्तित्व निर्माण होता है। वेदों के साथ साथ छात्र विज्ञान आदि नवीन विषय का भी अध्ययन करते हैं। उन्होंने यह भी उल्लेख किया कि वर्तमान समय में वेद पाठशालाओं को पुनः व्यापक महत्त्व प्राप्त हो रहा है तथा वेदपाठी छात्र विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट उपलब्धियाँ प्राप्त कर आगे बढ़ रहे हैं, जिससे समाज में वैदिक शिक्षा के प्रति विश्वास और आकर्षण बढ़ा है। प्रो. वीरनारायण पाण्डुरंगी जी ने पूर्णप्रज्ञसंशोधनमन्दिरम् द्वारा वेद एवं शास्त्रों के अध्ययन, संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार हेतु किए जा रहे विविध प्रयासों तथा प्रकाशन गतिविधियों पर प्रकाश डाला।

18 मार्च 2026 को दिन में समापन (Valedictory) सत्र का आयोजन हुआ। इस में श्री श्री विश्वप्रसन्नतीर्थ स्वामी जी की गरिमामयी उपस्थिति रही। इस अवसर पर आचार्य कुप्पा शिव सुब्रह्मण्य अवधानी जी, प्राचार्य धर्मगिरि वेदपाठशाला, तिरुमल (टीटीडी) तिरुपति, डा. अहल्या शर्मा जी, (कुलपति, कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय), प्रो. विरूपाक्ष वि जड्डीपाल्, (प्रतिष्ठान सचिव), प्रो. वीरनारायण पांडुरंगी, (निदेशक, पूर्णप्रज्ञ-संशोधनमन्दिरम्), प्रो. सत्यनारायणाचार्य, (प्राचार्य, पूर्णप्रज्ञ विद्यापीठ, बेंगलूरु) तथा डा. र. वि जागीरदार, (ट्रस्टी, साक्षी ट्रस्ट, बेंगलुरु) विशिष्ट अतिथियों के रूप में उपस्थित रहे। अपने उद्बोधन में डा. अहल्या शर्मा जी ने वैदिक साहित्य के वैज्ञानिक स्वरूप को रेखांकित करते हुए सामवेद को भारतीय शास्त्रीय संगीत का मूल स्रोत बताया। उन्होंने यह भी अवगत कराया कि कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा सामवेद की "राणायनीय शाखा" पर विशेष शोध कार्य किया जा रहा है। इसी अवसर पर डा र. वि. जागीरदार जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए श्री अरविन्दो की वेद-संबंधी दृष्टि का उल्लेख किया और बताया कि वेदों को उन्होंने गहन आध्यात्मिक एवं दार्शनिक ज्ञान का भण्डार माना है। उन्होंने यह भी कहा कि आधुनिक युग में आर्. एल् कश्यप जी (जो मूलतः अमेरिका में इंजीनियर थे) भारत आकर वेदों के अनुवाद एवं भाष्य के माध्यम से वैदिक ज्ञान को व्यापक समाज तक पहुँचाने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

सम्मेलन के दौरान विविध सत्रों में तीनों दिन चारों वेदों के नौ शाखाओं का वेद पारायण, शास्त्रीय व्याख्यान, बसवनगुडी से पूर्णप्रज्ञ-संशोधन-मन्दिरम् तक वेदसन्देशयात्रा तथा संगीत-सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन वैदिक परम्परा के संरक्षण, जागृति, भारतीय ज्ञान परम्परा के संवर्धन तथा राष्ट्रीय एकता के वैदिक चिन्तन से सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल सिद्ध हुआ। समापन सत्र में प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र प्रदान किए गए तथा वेद परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु निरंतर प्रयास करने का संकल्प व्यक्त किया गया। सम्मेलन का समापन इस आशा और संकल्प के साथ हुआ कि अधिकाधिक विद्यार्थी सस्वर वेदाध्ययन से जुड़ेंगे तथा आचार्यगण और अधिक दायित्वबोध के साथ सस्वर वेदों का शिक्षण कर वैदिक परम्परा के संरक्षण एवं संवर्धन को सुदृढ़ करेंगे। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन का समापन हुआ।

क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन

प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों में वैदिक सम्मेलनों का महत्त्वपूर्ण स्थान है और यह सम्पूर्ण देश में वैदिक अध्ययन और ज्ञान के प्रचार के प्रमुख साधन हैं। सम्मेलन आयोजक के रूप में उत्कृष्ट वैदिक संस्थाओं, विश्वविद्यालयों, विद्यापीठों आदि के सहयोग से सम्पन्न किये जाते हैं। महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा प्रतिवर्ष सम्पूर्ण देश में वेद के प्रचार एवं प्रसार को ध्यान में रखकर छह क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन, उत्तर पूर्व राज्य में एक क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन, एक अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन आयोजित किये जाते हैं। इस सम्मेलन में सस्वर वेदपाठी भाग लेते हैं। प्रति सम्मेलन में वेद पारायण, वेदों पर चिन्तन तथा वेद शोभायात्रा का आयोजन किया जाता है।

प्रतिष्ठान एवं श्री अयोध्याप्रसादजी वैदिक पाठशाला, श्री स्वामिनारायण मन्दिर, जेतलपुर, अहमदाबाद (गुजरात) के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन

दिनांक 08-10 जनवरी 2026 तक प्रतिष्ठान तथा श्री श्री अयोध्याप्रसादजी वैदिक पाठशाला, श्री स्वामिनारायण मन्दिर, जेतलपुर, अहमदाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन जेतलपुर, अहमदाबाद में किया गया। इसमें गुजरात, महाराष्ट्र, राजस्थान , मध्यप्रेदश तथा दिल्ली राज्यों के लगभग 100 वैदिक गुरुओं ने वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया।

प्रथम दिवस (08 जनवरी 2026) में प्रातःकाल वेदपारायण सत्र के पश्चात् उद्घाटन कार्यक्रम के अध्यक्ष प.पू.ध. धू. 108 श्री व्रजेन्द्रप्रसाद महाराज जी, प.पू.शास्त्री स्वामी श्री आत्मप्रकाशदास जी, प. पू. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदास जी, उद्घाटन के मुख्य अतिथि माननीय सञ्जय सिंह महिडा, ग्रामीण विकास मन्त्री, मनोज सिंह जी, प्रतिष्ठान के सहायक निदेशक डॉ. अनूप कुमार मिश्र ने अपने उद्बोधन में वेदों के प्रचार-प्रसार में महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान में योगदान पर विस्तृत चर्चा की। प्रथम दिवस द्वितीय सत्र में वेदों पर एक लघु व्याख्यान सत्र आयोजित किया गया जिसमें सत्राध्यक्ष श्री वाचस्पति मिश्र जी, सारस्वत अतिथि स्वामी श्री सत्य प्रकाश दास, मुख्यातिथि डॉ.कमलेश भाई चौकसी, विशिष्ट अतिथि प्रो. ललित पटेल ने वेदों के विभिन्न विषयों पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम रात्रि 09 से 10 तक श्री अयोध्याप्रसाद जी वैदिक पाठशाला, जेतलपुर के छात्रों द्वारा (शिव ताण्डव) संगीत पर नृत्य कार्यक्रम तथा गुरुशिष्य परम्परा को दर्शाते हुए, द्रोणाचार्य और एकलव्य का संस्कृत भाषा में नाटक प्रस्तुत किया गया। इसी क्रम में एम.पी.पाण्ड्या कॉलेज के छात्रों द्वारा भारत के विभिन्न राज्यों की सांस्कृतिक लोकनृत्य प्रस्तुत किया ।

वैदिक सम्मेलन के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्रान्तर्गत गोरक्षा हेतु "गावो विश्वस्य मातरः" इस सूक्ति को ध्यान में रखकर "श्री स्वामिनारायण गौशाला" में सभी संतों व अधिकारीगण, वैदिकों द्वारा "गोसूक्त" से गो पूजन किया गया। तदपश्चात् 11 बजे तक वेद पारायण सत्र रहा, जिसमें यजमानों द्वारा वैदिक विद्वानों का भी पूजन किया गया। विचार सङ्गोष्ठी सत्र में सारस्वत अतिथि डॉ.भाव प्रकाश गाँधी ने " वेदों

में आत्म निर्भरता" विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। सत्राध्यक्ष ब्रह्मचारी स्वामी श्रीहरिस्वरूपानन्द ने "Make in India", शास्त्री स्वामी श्री भानुप्रकाश दास ने "सामवेद में भारतीय शास्त्रीय संगीत" आदि विषय पर व्याख्यान दिया।

द्वितीय दिवस के द्वितीय सत्र में 03 से 04 बजे तक वेद पारायण किया गया। तदपश्चात् "वेद सन्देश यात्रा" का आरम्भ किया गया, जिसमें सभी संतगण, अधिकारीगण, समस्त वैदिक विद्वान एवं श्री अयोध्याप्रसाद जी वैदिक पाठशाला, जेतलपुर तथा श्री स्वामिनारायण संस्कृत महाविद्यालय के अध्यापक व छात्र उपस्थित रहे तथा समस्त ग्रामवासी एवं एम.पी.पाण्ड्या स्कूल/कॉलेज के छात्र-छात्राएँ भी उपस्थित रहीं। इस वेद शोभा यात्रा में लगभग 700 लोग उपस्थित रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन रात्रि 9:00 से 10:00 बजे तक किया गया, जिसमें गुजरात राज्य का सुप्रसिद्ध सांस्कृतिक 'डायरो' (लोक-संगीत प्रस्तुति) आयोजित किया गया।

तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में प्रातः 08 से 11 बजे तक वेदपारायण किया गया। व्याख्यान सत्र 11 से 12.30 बजे तक सत्राध्यक्ष प. पू. शास्त्री स्वामी श्री आत्मप्रकाशदास जी ने "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्", सत्र के सारस्वत अतिथि शा. स्वामी श्री निर्गुणदास जी ने "चेतनाचेतनयोः मेलनमेव विशिष्टाद्वैतसिद्धान्तः", पं. श्री वेंकटरमण घनपाठी जी ने "चतुर्णां वेदानां परिचयः एवञ्च अष्टविकृतिनां परिचयः" , विशिष्ट अतिथि प्रो. श्री सत्यप्रकाश दुबे जी ने "वैदिक साहित्य में शब्दों के अर्थ पटल की व्यापकता" पर आधारित विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन के समापन सत्र में प. पू. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदास जी, डॉ. अनूप कुमार मिश्र , प्रो. निरञ्जनभाई पटेल, पं. श्री वेंकटरमण घनपाठी आदि उपस्थित रहे। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठान एवं केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, एकलव्य परिसर एवं भोलानन्द वेद विद्यालय, अगरतला (त्रिपुरा) के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन

दिनाङ्क 17 से 19 फरवरी, 2026 तक प्रतिष्ठान तथा वेद-कर्मकाण्ड-पौरोहित्यविद्या शाखा, केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, एकलव्य परिसर एवं भोलानन्द वेद विद्यालय, अगरतला, त्रिपुरा के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन एकलव्य परिसर में किया गया। इस क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन में असम, मणिपुर, बिहार, सिक्किम तथा त्रिपुरा राज्यों के वैदिक गुरुओं ने वेद की सभी शाखाओं का सस्वर पाठ किया।

सम्मेलन के प्रथम दिन 17 फरवरी 2026 को प्रातः 9.30 बजे से 11.00 तक विभिन्न प्रान्तों से आगत वेदपाठियों ने स्व-स्व शाखा का वेद पारायण किया। उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि कामेश्वर शुक्ल तथा एकलव्य परिसर के निदेशक प्रो. एस.के. मखलेश कुमार उपस्थित थे। सम्पूर्ण सत्र का सञ्चालन डॉ. निशान्त मिश्र द्वारा किया गया। द्वितीय दिन 18 फरवरी 2026 को प्रातः एक शोभायात्रा निकाली गई। रात्रि 8 बजे के बाद, उदयपुर स्थित त्रिपुरेश्वरी शक्ति पीठ में वैदिकों ने वेदों का पाठ किया। तत्पश्चात, वैदिकों द्वारा कमला सागर स्थित कासबकाली माता मन्दिर में वेदों का पाठ किया गया।

तृतीय दिन 19 फरवरी 2026 गुरुवार को प्रातः 9 बजे वेदों का पाठ किया गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि श्री इन्द्रसेना रेड्डी नल्लू महाभागा, माननीय राज्यपाल, त्रिपुरा थे। माननीय राज्यपाल जी ने कहा कि आस-पास के समस्त निवासियों को परस्पर में संस्कृत में बातचीत करनी चाहिए। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

प्रतिष्ठान एवं श्री भगवत् धर्म संस्कृत वेद विद्यालय छात्राश्रम, जिन्दोली घाटी, खैरथल, अलवर, राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का आयोजन

प्रतिष्ठान तथा श्री भगवत् धर्म संस्कृत वेद विद्यालय छात्राश्रम, जिन्दोली घाटी, खैरथल, अलवर, राजस्थान के संयुक्त तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन दिनांक 28 मार्च से 30 मार्च, 2026 तक आयोजित हुआ।

दिनांक 28 मार्च, 2026 को भगवत् धर्म संस्कृत वेद विद्यालय, छात्राश्रम, जिन्दोली घाटी, खैरथल, अलवर, राजस्थान में प्रातः सभी वेद की शाखाओं के पारायण से क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का प्रारम्भ हुआ। उद्घाटन सत्र के अतिथि स्वामी बालकादेवाचार्य जी महाराज अरण्यगिरि आश्रम, मुख्यातिथि श्री बलवीर सिंह छिल्लर (जिला प्रमुख, अलवर) अति विशिष्टातिथि श्री ललित यादव (विधायक मुण्डावर), सारस्वत अतिथि श्री महासिंह चौधरी (जिलाध्यक्ष भाजपा), प्रतिष्ठान प्रतिनिधि के रूप में म.सा.रा.वे.वि.प्र के सहायक निदेशक डॉ. अनूप कुमार मिश्र उपस्थित थे।

सायंकालीन में भव्य वेद संदेश शोभा यात्रा वैदिक सम्मेलन कार्यक्रम स्थल से लगभग 8 किमी. दूर खैरथल शहर में सामाजिक समरसता मंच, खैरथल से वेद शोभा यात्रा निकाली गई। इस शोभा यात्रा में खैरथल शहर में स्थान-स्थान पर जनसमूह ने पुष्पमाला तथा पुष्प से सभी वैदिकों का स्वागत किया। साथ ही जगह-जगह पर ठंडाई, जूस, फल वितरित करते हुए अपार जनसमूह ने स्वागत किया। स्वागतकर्ताओं में विशेष रूप से श्री ओमप्रकाश रोधा, श्री सर्वेश गुप्ता, श्री विक्रम चौधरी, श्री किशन सिंह चौहान, श्री पुरुषोत्तम गुप्ता, श्री योगेश गुप्ता थे। यह शोभा यात्रा अद्वितीय रही। इसी दिन रात्रि में कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया, सभी वैदिकों ने कवि सम्मेलन का आनन्द लिया।

दिनांक 29 मार्च, 2026 को प्रात सभी वेद की शाखाओं का पारायण किया गया। इस दिन के प्रथम सत्र के मुख्य अतिथि श्री बी. एम. शर्मा (आई.ए.एस.), विशिष्ट अतिथि श्री बनवारी लाल सिंघल (पूर्व विधायक, अलवर) , सारस्वत अतिथि प्रो. रामराज उपाध्याय (श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली) तथा प्रतिष्ठान की ओर से डॉ. अनूप कुमार मिश्र उपस्थित थे। इसी दिन सायंकालीन सत्र में मुख्यातिथि श्री अमित गुप्ता (उद्योगपति), विशिष्टातिथि श्री सुरेन्द्र शर्मा (उद्योगपति), सारस्वत अतिथि श्री राजेन्द्र शर्मा, अध्यक्ष, पुजारी महासंघ राजस्थान उपस्थित थे। इन सभी के सान्निध्य में वेद की शाखाओं का पारायण सम्पन्न किया गया। बीच-बीच में वेद की

शाखाओं का घनपाठ भी हुआ जिसके कारण सम्मेलन में दिव्यता एवं ऊर्जा दिखाई दी। रात्रि में लोक नृत्य संगीत का सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किया गया।

दिनांक 30 मार्च, 2026 को प्रातः काल वेद शाखाओं का पारायण किया गया। इसके बाद सत्र का आरम्भ हुआ। इस दिन मुख्य अतिथि श्री विवेक कटारिया, तहसीलदार, मुण्डावर, विशिष्ट अतिथि श्री संजय यादव, विकास अधिकारी, मुण्डावर, सारस्वत अतिथि प्रो. उमेश प्रसाद दास (सेवानिवृत्त वेद प्रोफेसर, जयपुर) श्रीमद् जगद्गुरु स्वामी बालकादेवाचार्य जी महाराज (अरण्यगिरि आश्रम), आचार्य श्री भगवत् दयाल वेदपाठी, संस्थापक, श्री भगवत् धर्म संस्कृत वेद विद्यालय छात्राश्रम, जिन्दोली घाटी, खैरथल, अलवर, राजस्थान उपस्थित थे। इस सत्र के अन्तिम भाग में समागत वेदपाठियों को संस्था की ओर से बैग, धोती, अंगवस्त्र अदि से सम्मानित करते हुए प्रमाणपत्र वितरित किए गए। इस प्रकार त्रिदिवसीय क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठियाँ

प्रतिष्ठान के कार्यक्रमों में वैदिक सङ्गोष्ठियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है और यह सम्पूर्ण देश में वैदिक अध्ययन और ज्ञान के प्रचार के प्रमुख साधन हैं। इस सन्दर्भ में प्रतिवर्ष अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठियाँ आयोजित की जाती हैं। उद्घाटन और समापन समारोह के साथ यह सङ्गोष्ठियाँ दोदिवसीय/त्रिदिवसीय आयोजित की जाती हैं। इस सङ्गोष्ठी में आयोजक के रूप में उत्कृष्ट वैदिक संस्थाएं, विश्वविद्यालय, महाविद्यालय आदि भाग लेते हैं। वैदिक अध्ययन के क्षेत्र में अनुसन्धान के प्रोत्साहन के लिए प्रतिष्ठान द्वारा प्राथमिकता के क्षेत्रों में सङ्गोष्ठियाँ सम्पन्न की जाती हैं। यह सङ्गोष्ठियाँ प्रतिष्ठान द्वारा पूर्ण अथवा आंशिक रूप से वित्तपोषित होती हैं।

वर्ष 2025-26 में प्रतिष्ठान द्वारा इस प्रकल्प हेतु विभिन्न संस्थाओं से प्राप्त प्रस्तावों में से 07 अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठियों का आयोजन करने की स्वीकृति प्रदान की गयी। जिसमें से 03 अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठियों का सफलतापूर्वक आयोजन अक्टूबर - दिसम्बर 2025 में किया गया एवं शेष 04 अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठियों का आयोजन इस अवधि में किया गया जिसका विवरण निम्नवत है:-

प्रतिष्ठान एवं आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्डा, जिला कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन

प्रतिष्ठान तथा आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्डा, जिला कुरुक्षेत्र (हरियाणा) के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनाङ्क 02 से 04 फरवरी, 2026 को त्रिदिवसीय राष्ट्रीय वैदिक संगोष्ठी का आयोजन "व्यवस्थित समाज का आधार: वैदिक संस्कृति" विषय पर त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस सङ्गोष्ठी के उद्घाटन सत्र के मुख्य अतिथि वेद मनीषी प्रो. मानसिंह जी थे। इस सत्र के अध्यक्ष श्री कुलदीप गुप्ता थे। बीज वक्ता के रूप में प्रो. राजेश्वर प्रसाद मिश्र , सारस्वत अतिथि डॉ. चित्तरञ्जन दयाल सिंह, प्रधान श्री रामलाल गुप्ता जी, सदस्य श्री महेन्द्र कंसल, श्री कपिल गुप्ता एवं महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. आरती त्रेहन आदि उपस्थित थे।

संगोष्ठी के प्रथम तकनीकी सत्र में सत्राध्यक्ष के रूप में प्रो. देवेन्द्र मिश्र (श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली) एवं देश बन्धु (केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली) थे। द्वितीय तकनीकी सत्र के अध्यक्ष प्रो. रामराज उपाध्याय (श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय) थे। गुरुनानक देव विश्वविद्यालय से डॉ. विशाल भारद्वाज, जम्मू से डॉ. अनयमणिः त्रिपाठी, अम्बाला से डॉ. भारती बन्धु जी उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त पञ्जाब, हरियाणा, चण्डीगढ़ एवं हिमाचल प्रदेश उत्तराखण्ड आदि विभिन्न राज्यों से आगात विद्वानों ने अपने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। अन्त में कैप्टन डॉ. ज्योति शर्मा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय के सभी सदस्य, शिक्षक वर्ग एवं शिक्षणेतर वर्ग एवं संस्कृत विभाग की सभी छात्राएं उपस्थित रहीं।

प्रतिष्ठान तथा श्री द्वारकाधीश संस्कृत अकादमी एवं इण्डोलोजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, द्वारका (गुजरात) के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन

प्रतिष्ठान तथा श्री द्वारकाधीश संस्कृत अकादमी एवं इण्डोलोजिकल रिसर्च इन्स्टीट्यूट, द्वारका के संयुक्त तत्त्वावधान में द्वारका शारदापीठ के परिसर में दिनाङ्क 06 से 08 फरवरी 2026 तक एक अखिल भारतीय त्रिदिवसीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें राष्ट्र के विभिन्न राज्यों से विद्वानों, कुलपतियों एवं शोधच्छात्रों ने भाग लिया।

इस त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का शुभारम्भ 06 फरवरी 2026 को प्रातः 08:00 बजे वैदिक शोभायात्रा के आयोजन से आरम्भ किया गया। द्वारका स्थित भद्रकाली चौक से छात्रों और अध्यापकों की वेद शोभा यात्रा प्रारम्भ हुई, जिसमें द्वारका से श्री शङ्कराचार्य अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ वेदविद्यालय, श्री शङ्कराचार्य अभिनव सच्चिदानन्द तीर्थ संस्कृत महाविद्यालय, राष्ट्रिय आदर्श वेद विद्यालय, श्री शारदापीठ आर्ट्स कामर्स एण्ड कालेज आफ एज्युकेशन, श्री चतुर्धाम न्यास सञ्चालित वेदविद्यालय, संस्कृत महाविद्यालय, श्री द्वारकाधीश संस्कृत एकेडमी तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं के प्राचार्य, अध्यापक, अध्यापिका, कर्मचारी एवं छात्र शोभायात्रा में सम्मिलित हुए। इस नगरीय वैदिक शोभायात्रा की पूर्णता श्री द्वारकाधीश मन्दिर के द्वार क्रमाङ्क एक पर सम्पन्न हुई।

इस उद्घाटन समारोह का श्रीगणेश द्वारकाशारदापीठाधीश्वर श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य महाराज स्वामी श्री सदानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में हुआ। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में श्री अर्जुन भाई मोढवाडीया, गुजरात राज्य के माननीय कैबिनेट वन पर्यावरण मन्त्री, विशिष्ट अतिथि प्रो. श्रीनिवास वरखेड़ी, सम्मानित विद्वान् प्रो. प्रताप सिंह चौहान, सारस्वत अतिथि प्रो. सुकान्त सेनापति , प्रो. सच्चिदानन्द मिश्र, डॉ. दिव्यचेतन ब्रह्मचारी, डॉ. गौतम पटेल एवं अतिथि विशेष डॉ. जयप्रकाश द्विवेदी आदि उपस्थित थे। सायङ्काल में संस्कृत और गुजराती गरबा रास के रूप में सांस्कृतिक कार्यक्रम 07.30 बजे से 09.00 बजे तक सम्पन्न हुआ, जिसमें संस्कृत के छात्र, शारदापीठ के समस्त छात्र तथा कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

दिनाङ्क 07 फरवरी 2026 को चार सत्रों में लगभग 30 शोध पत्रों का वाचन किया गया। संगोष्ठी के दूसरे दिन शाम 07:30 बजे से 09:20 तक संस्कृत कवि गोष्ठी में ब्रह्मर्षि सं.म.वि. के प्राचार्य डॉ. अमृतलाल भोगायता, आदर्श वेद विद्यालय की अध्यापिका सोनाली तिवारी, पोरबन्दर से आये डॉ. सहदेव जोशी, डॉ. गौतम पटेल और नरसिंह भोगायता, प्रो. नरेन्द्र पंड्या तथा डॉ. उदय व्यास प्रभृति कवियों ने काव्य-पाठ किया और अन्त में प्रो. मुरली मनोहरपाठक, कुलपति, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली ने अपनी पाण्डित्यपूर्ण शैली में सभी कवियों को आशीर्वाद दिया। इसी के समानान्तर आभासीय सत्र का आयोजन हुआ, जिसमें प्रतिष्ठान के माननीय उपाध्यक्ष प्रो. श्री हृदयरञ्जन जी शर्मा की अध्यक्षता में प्रो. कमल किशोर , शत्रुघ्न पाणिग्रही एवं अन्य विद्वानों ने भाग लिया ।

तृतीय दिन 08 फरवरी 2026 को प्रातः 09:00 बजे से सत्र आरम्भ हुआ जो अपराह्न 01:30 बजे तक चला। इस समापन सत्र में अध्यक्ष के रूप में श्रीजगद्गुरु शङ्कराचार्य जी के प्रतिनिधि महात्मा श्री नारायणानन्द ब्रह्मचारी जी थे। मुख्य अतिथि प्रो. मुरली मनोहर पाठक, विशिष्ट अतिथि प्रो. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी, सारस्वत अतिथि डॉ. गौतम पटेल, अतिथि विशेष प्रो. मयूरी भाटिया उपस्थित थीं। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठान तथा कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलबारी (असम) के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन

दिनाङ्क 10 से 12 फरवरी, 2026 तक प्रतिष्ठान तथा कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलबारी (असम) के संस्कृत वेदाध्ययन विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस चर्चा का मुख्य विषय था - पूर्वोत्तर भारत में वैदिक शिक्षा परम्परा।

प्रथम दिन वैदिक मङ्गलाचरण से उद्घाटन समारोह का शुभारम्भ हुआ। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. डॉ. प्रह्लाद आर जोशी ने स्वागत भाषण दिया। मुख्य अतिथि के रूप में स्वामिनारायण शोध संस्थान (अक्षरधाम, नई दिल्ली) के प्रमुख आचार्य एवं अध्यक्ष महामहोपाध्याय साधुश्री भद्रेश दास जी, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. रवीन्द्रनाथ भट्टाचार्य तथा बीज वक्ता के रूप में प्रो. कामेश्वर शुक्ल ने भी वैदिक शिक्षा परम्परा पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

चर्चा सत्र के अन्तर्गत कुल छह शैक्षणिक सत्र हुए, जिनमें सत्राध्यक्ष के रूप में प्रो. मौ दास गुप्ता, प्रो. तारकनाथ अधिकारी, प्रो. सुमन के एस, प्रो.देवराज पाणिग्राही तथा डॉ. विश्वबन्धु उपस्थित रहे। इन छह सत्रों में पूर्वोत्तर भारत से आमन्त्रित विद्वानों ने अपने-अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए।

समापन समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. सुदेष्णा भट्टाचार्य तथा विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. जगदीश शर्मा उपस्थित रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति ने कार्यक्रम सम्पन्न कराने हेतु संस्कृत वेदाध्ययन विभाग के सभी सदस्यों को धन्यवाद दिया। कार्यक्रम में प्रतिवेदन का वाचन कार्यक्रम के संयोजक एवं विश्वविद्यालय के संस्कृत वेदाध्ययन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. प्रणवज्योति डेका ने किया। धन्यवाद ज्ञापन विभागाध्यक्ष एवं चर्चा सत्र की समन्वयिका डॉ. वर्णाली बरठाकुर ने किया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय के वेद-वेदाङ्ग सङ्काय के अधिष्ठाता डॉ. सुधाकर मिश्र, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष, शिक्षकगण, महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के प्रतिनिधि श्री जय धूपकरिया, शोधार्थी तथा विद्यार्थी उपस्थित थे। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रतिष्ठान तथा महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन

दिनाङ्क 10 फरवरी 2026 से 12 फरवरी 2026 तक प्रतिष्ठान तथा महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रथम दिवस दिनाङ्क 10-02-2026 को प्रातः 10.00 बजे उद्घाटन सत्र के अध्यक्ष माननीय कुलगुरु प्रो. शिवशङ्कर मिश्र, मुख्यातिथि के रूप में प्रतिष्ठान के पूर्व उपाध्यक्ष प्रो. देवीप्रसाद त्रिपाठी, विशिष्टातिथि के रूप में माननीय कुलगुरु प्रो. योगेशचन्द्र गोस्वामी, प्रो. विनय कुमार पाण्डेय, प्रो. अमित कुमार शुक्ल तथा सारस्वतातिथि के रूप में प्रो. परमानन्द भारद्वाज उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सञ्चालन डॉ. सङ्कल्प मिश्र तथा डॉ. शुभम शर्मा द्वारा किया गया।

सङ्गोष्ठी के विभिन्न सत्रों में प्रो. परमानन्द भारद्वाज, प्रो. बालकृष्ण शर्मा, प्रो. अमित कुमार शुक्ल, प्रो. विष्णु निर्मल, प्रो. केदारनारायण जोशी, प्रो. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र, प्रो. अशोक थपलियाल, डॉ. अखिलेश कुमार द्विवेदी आदि द्वारा अध्यक्षता की गई। सम्पूर्ति सत्र में प्रो. शिवशङ्कर मिश्र, कुलगुरु, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन, मुख्यातिथि के रूप में माननीय कुलपति प्रो. शरदचन्द्रबानखेड़े, विशिष्टातिथि के रूप में प्रो. मनोज मिश्र, प्रो. कृष्णकुमार पाण्डेय आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सञ्चालन वास्तु विभाग के प्राध्यापक डॉ. विजय कुमार एवं धन्यवाद ज्ञापन ज्योतिष विभागाध्यक्ष डॉ. उपेन्द्र भार्गव द्वारा किया गया। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के आचार्यगण एवं छात्र-छात्राएँ तथा अन्य स्थानों के जिज्ञासु उपस्थित रहे। इस प्रकार त्रिदिवसीय अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी का आयोजन सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

द्वादश ज्योतिर्लिंगों में द्वादश सौमिक सुवृष्टि सोमयाग का आयोजन

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का स्वयात्तशासी संस्था) द्वारा वेदों के संरक्षण, प्रचार-प्रसार तथा वेदों में निहित ज्ञान राशि का अनुप्रयोग एवं अनुसन्धान के उद्देश्य से वेद ऋषियों द्वारा दृष्ट जलवायु परिवर्तन, वर्षा पैटर्न, वृष्टिविज्ञान, पर्यावरण विज्ञान, मौसम विज्ञान, कृषि विज्ञान के प्रायोगिक ज्ञान-अनुप्रयोग पक्षों के उन्नयन हेतु तथा जलाशयों में जल के स्तर को बढ़ाने एवं मानसून की अनिश्चितताओं को ध्यान में रखते हुए शासी परिषद् के निर्णयानुसार देश के द्वादश (12) ज्योतिर्लिङ्गों – रामेश्वरम्, भीमाशङ्कर, त्र्यम्बकेश्वर, घृष्णेश्वर, मल्लिकार्जुन, ओङ्कारेश्वर, सोमनाथ, महाकालेश्वर, नागेश्वर, वैद्यनाथ, विश्वनाथ तथा केदारनाथ में प्रयोग रूप में सत्र 2026-27 में 12 सोमयाग आयोजित किए जा रहे हैं। जिसमें से 7 सोमयाग 7 ज्योतिर्लिङ्गों पर सम्पन्न किए जा चुके हैं एवं उज्जैन, मध्य प्रदेश के महाकालेश्वर में दिनांक 28 मार्च 2026 से सोमयाग का आयोजन किया गया। शेष सोमयाग अप्रैल तथा मई माह में सम्पन्न होंगे।

1. 12 ज्योतिर्लिङ्गों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से प्रथम अनुष्ठान 01 फरवरी 2026 से 06 फरवरी 2026 की अवधि में तमिलनाडु के रामेश्वरम ज्योतिर्लिंग में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

2. 12 ज्योतिर्लिङ्गों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से द्वितीय अनुष्ठान 13 फरवरी 2026 से 18 फरवरी 2026 की अवधि में महाराष्ट्र के भीमाशङ्कर ज्योतिर्लिंग में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

3. 12 ज्योतिर्लिङ्गों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से तृतीय अनुष्ठान 17 फरवरी 2026 से 22 फरवरी 2026 की अवधि में महाराष्ट्र के त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

4. 12 ज्योतिर्लिङ्गों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से चतुर्थ अनुष्ठान 27 फरवरी 2026 से 04 मार्च 2026 की अवधि में महाराष्ट्र के घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग संभाजी नगर (औरङ्गाबाद) में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

5. 12 ज्योतिर्लिंगों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से पञ्चम अनुष्ठान 03 मार्च 2026 से 08 मार्च 2026 की अवधि में आन्ध्रप्रदेश के श्रीशैलम ज्योतिर्लिंग (मल्लिकार्जुन) में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

6. 12 ज्योतिर्लिङ्गों पर 12 सोमयागों की शृंखला में से षष्ठ अनुष्ठान 14 मार्च 2026 से 19 मार्च 2026 की अवधि में मध्य प्रदेश के ओङ्कारेश्वर ज्योतिर्लिंग में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

7. 12 ज्योतिर्लिंगों पर 12 सोमयागों की श्रृंखला में से सप्तम सोमयाग 18 मार्च 2026 से 23 मार्च 2026 की अवधि में गुजरात के सोमनाथ ज्योतिर्लिंग में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

8. 12 ज्योतिर्लिंगों पर 12 सोमयागों की श्रृंखला में से अष्टम सोमयाग 28 मार्च 2026 से 02 अप्रैल 2026 की अवधि में उज्जैन, मध्य प्रदेश के महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग में सफलतापूर्वक आयोजित किया जा रहा है।

गणतन्त्र दिवस 2026

भारत में प्रत्येक वर्ष 26 जनवरी को गणतन्त्र दिवस बड़े उत्साह और राष्ट्रीय गौरव के साथ मनाया जाता है। 26 जनवरी 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ था और इसी दिन भारत एक सम्पूर्ण गणराज्य बना। यह दिवस हमारे संविधान, लोकतन्त्र और राष्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

गणतन्त्र दिवस 2026 के सुअवसर पर महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन में भव्य एवं गरिमामय समारोह का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय के विद्यार्थियों की अनुशासित परेड आकर्षण का केन्द्र रही। कार्यक्रम का शुभारम्भ प्रातः 08 बजे परिसर में ध्वजोत्तोलन से हुआ। प्रतिष्ठान के सचिव महोदय ने ध्वजोत्तोलन किया तथा समस्त उपस्थित ने सामूहिक रूप से राष्ट्रगान गाकर राष्ट्र के प्रति अपनी निष्ठा प्रकट की। प्रतिष्ठान के सचिव महोदय ने अपने उद्बोधन में 'गण' शब्द की वैदिक परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। वैदिक साहित्य तथा प्राचीन शिलालेखों में 'गण' शब्द का प्रयोग समूह, सभा तथा संगठित समाज के अर्थ में मिलता है। प्राचीन शिलालेखों में "मालवानां गणः" भी उल्लेख है।

भारतवर्ष का सौभाग्य है कि उसकी राष्ट्र-चिन्तन परम्परा वेदों से प्रेरित रही है। वेदों में वर्णित सामूहिक निर्णय, सभा-समिति की व्यवस्था तथा 'संगच्छध्वं संवदध्वं' (ऋग्वेद 10.191.2) जैसे मन्त्र गणतान्त्रिक भावना के मूलाधार हैं। गणतन्त्र की अवधारणा वस्तुतः भारत के वैदिक मूलाधार में निहित है। प्राचीन भारत में 'गणराज्य' व्यवस्था इसका प्रमाण है, जहाँ सामूहिक नेतृत्व और लोक-सहमति को महत्त्व दिया जाता था। "पञ्चप्रतिज्ञाः कर्त्तव्याः" अर्थात् आज के गणतन्त्र भारत में पाँच संकल्प नागरिक कर्त्तव्यों का पालन राष्ट्र की उन्नति का आधार है। प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह संविधान के आदर्शों, न्याय, स्वतन्त्रता, समता और बन्धुता, का पालन करे तथा राष्ट्र की एकता और अखण्डता की रक्षा करे। इस अवसर पर छात्रों द्वारा देशभक्ति गीतों की भी प्रस्तुति दी गई। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठान के समस्त अधिकारी, अध्यापकों, विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

ई-ऑफिस से सम्बन्धित कार्यशाला का आयोजन

भारत सरकार, शिक्षा मन्त्रालय के निर्देशों के अनुसार महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन में ई-ऑफिस सिस्टम लागू करना प्रारम्भ हो गया है। इस पहल का उद्देश्य सरकारी काम में पेपरलेस कामकाज, पारदर्शिता और कुशल फाइल प्रबंधन को बढ़ावा देना है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत प्रतिष्ठान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए ई-ऑफिस सिस्टम पर प्रशिक्षण आयोजित किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम रेलटेल (RailTel) एवं राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र सेवा इंक (NICSI) ने दिनांक 3 से 10 फरवरी, 2026 तक ऑनलाइन मोड में आयोजित किया था। तत्पश्चात् रेलटेल के विशेषज्ञ प्रशिक्षकों ने भी प्रतिष्ठान का दौरा किया तथा सिस्टम को बेहतर ढंग से समझने और आसानी से अपनाने के लिए कर्मचारियों को हैंड्स-ऑन फिजिकल प्रशिक्षण प्रदान किया। इस प्रशिक्षण के माध्यम से कर्मचारियों को ई-ऑफिस प्लेटफॉर्म के अलग-अलग मॉड्यूल से परिचित कराया गया, जिसमें ई-फाइल प्रबन्धन एवं डिजिटल वर्कफ्लो सम्मिलित हैं। प्रतिष्ठान अपने आधिकारिक फाइल संसाधन को चरणबद्ध तरीके से शनैः-शनैः ई-ऑफिस प्रणाली में स्थानान्तरित करेगा।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उज्जैन के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित 'भारतीय ज्ञान परम्परा' विषयक कार्यशाला

दिनांक 28.10.2025 को आयोजित नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उज्जैन की 61वीं छमाही बैठक में महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन को हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में भारतीय ज्ञान परम्परा विषयक एक कार्यशाला आयोजित करने का दायित्व दिया गया था।

उक्त के अनुपालन में संस्कृति समृद्ध उज्जयिनी में प्रतिष्ठान के सभागार में दिनांक 12.02.2026 को 'शब्द-ब्रह्म के आलोक में भाषा, चेतना एवं भारतीय ज्ञान परम्परा' विषयक कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला का शुभारम्भ मंगलाचरण से हुआ, जिसमें ऋग्वेद शाकल शाखा के वेदाध्यापकगण द्वारा वैदिक मन्त्रों का सस्वर उच्चारण कर सभागार को आध्यात्मिक स्पन्दन से अनुप्राणित किया। तत्पश्चात् अतिथिगण का पारम्परिक रीति से माल्यार्पण कर स्वागत किया गया।

कार्यशाला की अध्यक्षता डॉ. राजा राम साह, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उज्जैन के माननीय अध्यक्ष एवं प्रधान आयुक्त आयकर (पु.इ.)–1, उज्जैन, द्वारा की गई। मुख्य वक्ता के रूप में राष्ट्रपति पुरस्कार से अलंकृत, सम्राट विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के संस्कृत विभाग के पूर्व अध्यक्ष एवं संस्कृत वाङ्मय के प्रखर मनीषी आचार्य केदारनारायण जोशी की गरिमामयी उपस्थिति से कार्यशाला अलंकृत हुई। विशिष्ट वक्ता के रूप में सम्राट विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के कुलानुशासक तथा हिन्दी अध्ययनशाला के विभागाध्यक्ष आचार्य शैलेन्द्र शर्मा जी की विद्वत्सम्पन्न उपस्थिति ने आयोजन को विशेष गरिमा एवं वैचारिक समृद्धि प्रदान की।

प्रतिष्ठान के सचिव महोदय प्रो. विरूपाक्ष वि. जड्डीपाल् ने कार्यशाला की विषय-प्रस्तावना रखी। प्रतिष्ठान के सचिव महोदय द्वारा विषय-प्रस्तावना में भारतीय ज्ञान परम्परा की वर्तमान प्रासंगिकता तथा 'शब्द-ब्रह्म' की दार्शनिक सत्ता, भाषिक संवेदना तथा भारतीय ज्ञान परम्परा में उसकी केन्द्रीय भूमिका पर प्रकाश डाला गया। मुख्य वक्ता आचार्य केदारनारायण जोशी ने वेद-वाङ्मय, व्याकरण-दर्शन एवं काव्य-शास्त्र के आलोक में शब्द-ब्रह्म और भारतीय ज्ञान परम्परा की अवधारणा का विस्तृत निरूपण किया। उन्होंने आचार्य दण्डी विरचित काव्यादर्श को उद्धृत किया - "इदमन्धं तमः कृत्स्नं जायेत भुवनत्रयम्। यदि शब्दाह्वयं ज्योतिरासंसारं न दीप्यते॥" उक्त के आलोक में उन्होंने कहा कि यदि शब्द का प्रकाश ब्रह्मांड को प्रकाशित नहीं करता, तो तीनों लोक घोर अन्धकार में डूब जाते। शब्द केवल ध्वनि न होकर चेतना का प्रकाश-तत्त्व है; वही ज्ञान का वहनकर्ता, संस्कृति का संवाहक एवं सभ्यता का आधार है। शब्द के अभाव में न ज्ञान सम्भव है, न संवाद। इस प्रकार शब्द ही वह दिव्य ज्योति है, जो मानव-जीवन को अर्थ, दिशा एवं उद्देश्य प्रदान करती है। विशिष्ट वक्ता आचार्य शैलेन्द्र शर्मा ने शब्द-चयन की संस्कारयुक्त परम्परा, भाषा की सामाजिक उत्तरदायित्व-बोधक भूमिका तथा संस्कृति के संरक्षण में हिन्दी एवं भारतीय भाषाओं के महत्त्व को प्रतिपादित किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, उज्जैन के माननीय अध्यक्ष एवं प्रधान आयुक्त आयकर (पु.इ.)–1 डॉ. राजा राम साह ने राजभाषा-संवर्धन, भाषिक दायित्व तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के समन्वित संवर्धन की आवश्यकता पर बल दिया।

प्रतिष्ठान के सहायक निदेशक एवं हिन्दी अधिकारी श्री संजय श्रीवास्तव ने धन्यवाद ज्ञापित किया। तत्पश्चात् शान्ति-पाठ के माध्यम से विश्व-शान्ति, सद्भाव एवं ज्ञान-प्रसार की मंगलकामना की गई। इस प्रकार 'भारतीय ज्ञान परम्परा' विषयक यह कार्यशाला भारतीय भाषिक-चेतना के पुनर्स्मरण, संवर्धन एवं समन्वित विकास की दिशा में प्रेरणादायी एवं सार्थक सिद्ध हुई।

प्रतिष्ठान में प्रवर्तमान निर्माण कार्यों का निरीक्षण

शैक्षणिक एवं आवासीय अवसंरचना के सुदृढ़ीकरण की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल के रूप में प्रतिष्ठान में प्रवर्तमान कतिपय निर्माण कार्य प्रगति पर हैं। इनमें 300 बिस्तरों वाले नवीन छात्रावास, अतिथि गृह, अनुसंधान केन्द्र ,संग्रहालय एवं पुस्तकालय (जी+3), प्रशासनिक भवन का विस्तार, पुराने छात्रावास भवन पर एक अतिरिक्त तल तथा पाठशाला भवन पर एक अतिरिक्त तल के निर्माण सम्मिलित हैं। दिनाङ्क 23.01.2026 को श्री महेन्द्र पाल सिंह, अपर महानिदेशक, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग द्वारा उक्त निर्माण कार्यों का निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कार्यों की प्रगति, निर्माण की गुणवत्ता तथा निर्धारित तकनीकी मानकों के अनुपालन का विस्तृत अवलोकन किया। साथ ही, उच्च गुणवत्ता युक्त निर्माण, कार्यस्थलों पर सुरक्षा मानकों के पालन तथा निर्धारित समयसीमा में कार्यों की पूर्णता सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया गया। इन सुविधाओं के विकसित होने से प्रतिष्ठान की संस्थागत क्षमता में उल्लेखनीय वृद्धि होगी तथा शैक्षणिक, आवासीय एवं अनुसंधान से संबंधित आवश्यकताओं की प्रभावी पूर्ति सुनिश्चित होगी।

वेद सम्बन्धित कौशल विकास एवं उद्यमिता पाठ्यक्रम (एनएसक्यूएफ स्तर 2.5 & 3.0) की परीक्षाएँ

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 की वेद सम्बन्धित कौशल विकास एवं उद्यमिता पाठ्यक्रमों (एनएसक्यूएफ स्तर 2.5 & 3.0) की लिखित परीक्षा दिनाङ्क 27.02.2026 एवं मौखिक, प्रायोगिक कार्य एवं परियोजना कार्य की परीक्षाओं का आयोजन दिनाङ्क 21 से 25 मार्च, 2026 तक किया गया। वेद सम्बन्धित कौशल विकास एवं उद्यमिता पाठ्यक्रमों (एनएसक्यूएफ स्तर 2.5 & 3.0) की परीक्षाओं हेतु प्रतिष्ठान से संबद्ध वेद पाठशालाओं एवं गुरुशिष्य परम्परा इकाइयों के छात्रों को ऑनलाइन माध्यम द्वारा परीक्षा पैनल से जोड़ा गया।

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा शैक्षणिक सत्र 2025-26 की वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन

देश में वेद एवं संस्कृत शिक्षा क्षेत्र में पूर्व-डिग्री स्तर/उच्चतर माध्यमिक स्तर तक की शिक्षा को आधुनिक शिक्षा से जोड़कर मानकीकरण, परीक्षा, सम्बद्धता, मान्यता, प्रमाणीकरण, सत्यापन, पाठ्यक्रम और वेदों की मौखिक परम्परा, पारम्परिक वैदिक या संस्कृत शिक्षा, पाठशाला प्रणाली, प्राच्य शिक्षा के सशक्तीकरण के लिए महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान द्वारा वेदभूषण प्रथम से चतुर्थ वर्ष (कक्षा 6ठीं से 9वीं) तथा वेदविभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा 11वीं) एवं महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड द्वारा वेदभूषण पञ्चम वर्ष (कक्षा 10वीं) तथा वेदविभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा 12वीं) की वार्षिक परीक्षाएँ प्रतिवर्ष आयोजित की जाती हैं। वेदभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा 6ठीं) से वेदविभूषण प्रथम वर्ष (कक्षा 11वीं) की वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में निर्धारित परीक्षा केन्द्रों पर एवं वेदविभूषण द्वितीय वर्ष (कक्षा 12वीं) की वार्षिक परीक्षाओं का आयोजन प्रतिष्ठान परिसर में प्रतिवर्ष किया जाता है।

शैक्षणिक सत्र 2025-26 में वेद पाठशाला एवं गुरुशिष्य परम्परा योजना तथा बाह्य परीक्षा प्रणाली में अध्ययनरत प्रथम से षष्ठ वर्ष की परीक्षाएं दिनांक 23.02.2026 से 27.02.2026 तक आयोजित की गईं तथा वेद-विभूषण द्वितीय वर्ष की परीक्षा प्रतिष्ठान परिसर में दिनांक 09.03.2026 से 13.03.2026 तक आयोजित की गईं। इन परीक्षाओं में 10,000 से अधिक छात्र प्रतिवर्ष भाग लेते हैं। विविध विश्वविद्यालयों द्वारा उच्च कक्षा में प्रवेश हेतु प्रतिष्ठान को परीक्षाओं की समकक्ष मान्यता प्रदान की गई है, जिसका उल्लेख अनुलग्नक-1में किया गया है।

अनुलग्नक - 1

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान के "वेद भूषण" (दसवीं /पूर्व मध्यमा समकक्ष) एवं "वेद विभूषण" (बारहवीं / उत्तर-मध्यमा समकक्ष) पाठ्यक्रमों को समकक्ष मान्यता प्रदान करने वाले विश्वविद्यालयों के नाम

1. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, 56-57, इंस्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी नई दिल्ली द्वारा
पत्र सं. 8-2/RSKS/Acd/Misc./2009-10/92 दिनांक 23जून, 2011/केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, दिल्ली
वेद भूषण समकक्ष (10वीं) **वेद विभूषण** समकक्ष (10 + 2)

2. केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय तिरुपति (आ.प्र.) द्वारा पत्र सं. RSVP/Recg/2011-12/1283 दिनांक 15 दिसम्बर, 2011/राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति
वेद भूषण समकक्ष एस.एस.सी. (10वीं) **वेद विभूषण** समकक्ष प्राक शास्त्री (10+2)

3. श्री वेंकटेश्वर वैदिक विश्वविद्यालय, तिरुपति, आं.प्र. द्वारा पत्र सं. SVVU/R.Peshi/Gen/103/2012 दिनांक 13 जुलाई, 2012
वेद भूषण समकक्ष ---- **वेद विभूषण** समकक्ष माध्यमिक एवं 10+2 परीक्षा

4. कर्नाटक संस्कृत विश्वविद्यालय, बेंगलुरु, कर्नाटक द्वारा पत्र सं. KSU/SSN/2012-13/185 दिनांक 19 नवम्बर, 2012
वेद भूषण समकक्ष वेद प्रवेश एवं वेद मूल /काव्य **वेद विभूषण** समकक्ष साहित्य

5. जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान द्वारा पत्र सं./जरारासंविवि/शैक्ष./12/5955 दिनांक 11/10/2012
वेद भूषण समकक्ष ---------- **वेद विभूषण** समकक्ष वरिष्ठ उच्चतर माध्यमिक

6. श्री जगन्नाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी, ओडिशा द्वारा पत्र सं. 4454/2013S.J.S.V., Puri Aca - 13/2000 दिनांक 30 अप्रैल, 2013
वेद भूषण समकक्ष ---------- **वेद विभूषण** समकक्ष उपशास्त्री (+2 कला)

7. श्री चन्द्रशेखरेन्द्र सरस्वती विश्व महाविद्यालय (मानित विश्वविद्यालय) कांचीपुरम, तमिलनाडु द्वारा पत्र सं. F/SCSVMV/REG/2012-13/D396 दिनांक 27 जून, 2013
वेद भूषण समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं

8. गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय (मानित विश्वविद्यालय), हरिद्वार, उत्तराखण्ड द्वारा पत्र सं. Acad/Res/2065/2013-14 दिनांक 14 सितम्बर, 2013
वेद भूषण समकक्ष विद्याधिकारी **वेद विभूषण** समकक्ष विद्याविनोद

9. महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक हरियाणा द्वारा पत्र सं. AC - 3/F - 208/2014/7221 दिनांक 27 मार्च, 2014
वेद भूषण समकक्ष विद्याधिकारी **वेद विभूषण** समकक्ष विद्याविनोद

10. उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय, हरिद्वार, द्वारा पत्र सं. 850/प्रशासन/2016दिनांक 03 फरवरी, 2016
वेद भूषण समकक्ष --------- **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं

11. इलाहाबाद विश्वविद्यालय, केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज द्वारा पत्र सं. CS/AC -4/2019/1246 दिनांक 15 अप्रैल, 2019
वेद भूषण समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं

12. इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू), केन्द्रीय विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा
पत्र सं. आई.जी./एस.आर.डी./आर-IV/समकक्ष/2019/590 दिनांक 4 अप्रैल, 2019
वेद भूषण समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं

13. पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ द्वारा पत्र सं. ST -1802 दिनांक 12 फरवरी, 2019
वेद भूषण समकक्ष मध्यमा **वेद विभूषण** समकक्ष प्राक शास्त्री

14. कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार द्वारा पत्र सं. 741 दिनांक 13 जून, 2019
वेद भूषण समकक्ष मध्यमा **वेद विभूषण** समकक्ष उपशास्त्री

15. कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत -पुरातनाध्ययन विश्वविद्यालय, नलबारी, असम द्वारा पत्र सं. KBVS & ASU/Reg-I-C/101-411 दिनांक 2 मार्च, 2020
वेद भूषण समकक्ष 10वीं **वेद विभूषण** समकक्ष 12वीं (शास्त्री –बी.ए. में प्रवेश हेतु)

16. केन्द्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश, धर्मशाला द्वारा पत्र सं. 1-1/हि.प्र.वि.वि./शै/2010/खंड – VI/4359 दिनांक 28 जुलाई, 2020 वेदविभूषण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण छात्र विज्ञान सम्बन्धी पाठ्यक्रम को छोड़कर अन्य स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु योग्य हैं ।

17. श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली -110016 द्वारा पत्र सं. F 3/12/LBSV/Acad./ 2020/ 2492 / 357 दिनांक 11 सितम्बर, 2020 वेदविभूषण पाठ्यक्रम उत्तीर्ण छात्र (12वीं के समकक्ष) विविध स्नातक स्तर के पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु मापदण्ड पूर्ण करने पर प्रवेश हेतु योग्य है ।

18. सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी, उ. प्र. द्वारा पत्र सं. SSVV/12/Shai.1114/2020 दिनांक 17 दिसम्बर, 2020
वेद भूषण समकक्ष पूर्व मध्यमा **वेद विभूषण** समकक्ष उत्तर मध्यमा

19. महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन द्वारा पत्र क्र. मपासंवि/अका/21-22/1102 दिनांक 07 फरवरी, 2022
वेद भूषण 10वीं समकक्ष **वेद विभूषण** 12वीं समकक्ष

टिप्पणी- इन विश्वविद्यालयों ने "वेद भूषण" और "वेद विभूषण" पाठ्यक्रमों को वेद, अंग्रेजी, संस्कृत, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि आधुनिक विषयों के साथ निर्धारित पाठ्यक्रम को उत्तीर्ण होने पर स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु मान्यता दी है।

वित्तीय वर्ष 2025-26 में 65वीं परियोजना समिति से स्वीकृत प्रतिष्ठान द्वारा आयोजित विविध कार्यक्रम

परियोजना समिति से स्वीकृत विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से वित्तीय वर्ष 2025-26 में आयोजित विविध कार्यक्रम

अखिल भारतीय वैदिक सम्मेलन

* पूर्णप्रज्ञ संशोधन मन्दिर, बेङ्गलूरु, कर्नाटक

क्षेत्रीय वैदिक सम्मेलन

* तन्त्र विद्यापीठम्, आलुवा, केरल
* श्री पद्मवैद्यम तीर्थ वेद विद्यालय सञ्चालित श्री ऋतुराज सेवा समिति, ग्राम-गुरौली, पो.ऑ. छपियाँ, जि.गोरखपुर (उ.प्र.)
* श्री अयोध्याप्रसादजी वैदिक पाठशाला, श्री स्वामिनारायण मन्दिर, जेतलपुर, अहमदाबाद (गुजरात)
* श्री हनुमत संस्कृत वेद विद्यापीठ, लक्ष्मण नगर, भामिया कलां रोड नजदीक सुन्दर नगर चौक, 33 फुट रोड, लुधियाना, पंजाब
* आचार्य वाचस्पति शुक्ल संस्कृत वेद विद्यालय, आवन तह. राघौगढ़, जिला गुना (म.प्र.)
* श्री भगवत् धर्म संस्कृत वेद विद्यालय छात्राश्रम, जिन्दोली घाटी, खैरथल, अलवर, राजस्थान
* उत्तरपूर्वी राज्य में – केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, एकलव्य परिसर तथा भोलानाथ वेद विद्यालय, अगरतला, त्रिपुरा

अखिल भारतीय वैदिक सङ्गोष्ठी

* संस्कृत विभाग, ओडिशा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कोरापुट
* महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक विश्वविद्यालय, उज्जैन
* कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभङ्गा, बिहार
* आर्य कन्या महाविद्यालय, शाहाबाद मारकण्डा, जिला कुरुक्षेत्र, हरियाणा
* श्री द्वारकाधीश शोध संस्थान, द्वारका एवं सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल के सहयोग से
* लेखकगाँव, देहरादून, उत्तराखण्ड में "स्पर्श हिमालय फाउण्डेशन, देहरादून, उत्तराखण्ड" के सहयोग से
* उत्तरपूर्वी राज्य में – कुमारभास्कर वर्मा संस्कृत एवं प्राचीन अध्ययन विश्वविद्यालय, नलवारी, असम

वेद ज्ञान सप्ताह समारोह

* पाणिनि कन्या महाविद्यालय, बी-38/77 तुलसीपुर, महमूरगंज, वाराणसी
* जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ (समविश्वविद्यालय), उदयपुर, राजस्थान
* शासकीय संस्कृत महाविद्यालय भितरी, जिला सीधी (म.प्र.)

सभी के लिए वैदिक कक्षाएँ

* श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली (वर्तमान में सञ्चालित हो रहा है)
* महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान का प्राधिकरण भवन, भरतपुरी, उज्जैन

सप्तदिवसीय वेद अनुसन्धान कार्यशाला

* वैदिक संशोधन मण्डल, पुणे

प्रेषक / From

सचिव/Secretary,
महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान
(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार का स्वायत्तशासी संस्थान)
MAHARSHI SANDIPANI RASHTRIYA VEDA VIDYA PRATISTHAN
(An Autonomous Organisation of Ministry of Education, Govt. of India)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण गणेश, पो.ऑ. जवासिया, उज्जैन (म.प्र.) 456006
Vedavidya Marg, Chintaman Ganesh, P.O. Jawasiya, Ujjian (M.P.) 456006
दूरभाष /Telephone : (0734) 2502254, 2502255
ई-मेल /E-mail : msrvvpujn.edu@gov.in; msrvvpujn@gmail.com
वेबसाइट / Website : www.msrvvp.ac.in